ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 05 जुलाई 2026

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 05 जुलाई 2026 से 11 जुलाई 2026

आषाढ़ कृ. 05 ● वि० सं०-2082 ● वर्ष 67, अंक 27, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 202 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रु. ● वार्षिक शु. 300/- रु.

आर्य समाज कोटा से नशा मुक्ति अभियान का हुआ शुभारंभ

आर्य समाज द्वारा चलाए गए जन जागरण सप्ताह का शुभारंभ महावीर नगर सेकंड स्थित गुरु नानक सामुदायिक भवन परिसर में आयोजित कार्यक्रम से हुआ। इसमें सफाई सैनिकों को नशा के दुष्परिणाम से अवगत कराते हुए नशे के विरुद्ध शपथ दिलाई गई।

इस अवसर पर विवेक राजवंशी ने कहा कि नशा नाश की जड़ है। एक बार व्यक्ति, परिवार और घर में इसका प्रवेश हो जाए तो इसका परिणाम सभी को भुगतना पड़ता है। राजवंशी ने इस आयोजन की प्रशंसा की और कहा कि आज समाज में ऐसे ही कार्यक्रमों की ज़रूरत है।

पार्षद गोपाल राम मांडा ने कहा कि नशे के सेवन से सामाजिक व आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है, अनेकों बीमारियाँ घर कर जाती हैं इसलिए नशे से बचना चाहिए। श्री अरविंद पांडेय ने नशे से सामाजिक और आर्थिक दुष्परिणामों पर विचार रखे और नशा मुक्ति की शपथ दिलाई।

आर्य समाज के मीडिया प्रभारी मुकेश चड्ढा ने बताया कि पूरे सप्ताह चलाए जा रहे कार्यक्रम के अंतर्गत आर्य समाज के कार्यकर्ता, विद्यार्थियों मजदूरों व जनसाधारण स्त्री पुरुषों के बीच जाकर व्याख्यान, संगोष्ठी, चिकित्सा कार्यक्रम, डेमो प्रदर्शन आदि विभिन्न माध्यमों से नशा मुक्ति के लिए जन जागरण के कार्यक्रम आयोजित करेंगे। गुरु नानक भवन महावीर नगर सेकंड में आयोजित जन जागरण के इस कार्यक्रम में कोटा के सभ्रान्त लोगों की उपस्थिति रही।

सोहन लाल डी.ए.वी. अम्बाला में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

सोहन लाल डी.ए.वी.शिक्षा महाविद्यालय अम्बाला शहर में 21 जून 2026 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम "Yoga for Healthy Ageing" (स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए

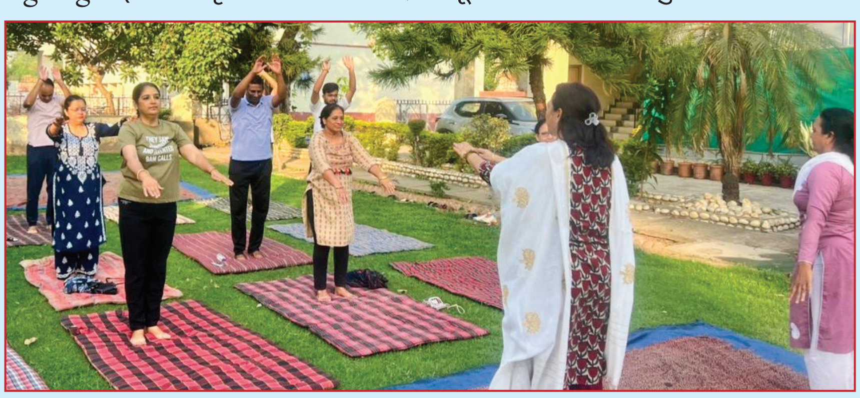

योग) रही, जिसका उद्देश्य योग के माध्यम से शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति एवं सक्रिय जीवनशैली को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम में आर्ट ऑफ लिविंग से जुड़ी श्रीमती भावना जी ने योग प्रशिक्षिका के रूप में प्रतिभागियों को विभिन्न योग आसनों, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास करवाया। उन्होंने योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने तथा स्वस्थ एवं संतुलित जीवनशैली अपनाने के लिए सभी को प्रेरित किया।

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति के माननीय अध्यक्ष आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी का संदेश सुनाया गया जिसमें आह्वान किया गया कि योग को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए तथा स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक जीवनशैली को अपनाया जाए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का यह आयोजन महाविद्यालय में स्वास्थ्य जागरूकता, सकारात्मक सोच और स्वस्थ जीवन मूल्यों को बढ़ावा देने की दिशा में एक सफल प्रयास रहा।

डी.ए.वी. मनाली (हि.प्र.) में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मनाली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग कार्यक्रम तथा विश्व शांति एवं

मानव कल्याण हेतु वैदिक हवन का आयोजन किया गया।

विद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित योग दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक गायत्री मंत्र के उच्चारण से हुआ। इसके उपरांत विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए योग को स्वस्थ, संतुलित एवं सफल जीवन की आधारशिला बताया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण योग प्रदर्शन एवं योगाभ्यास सत्र रहा, जिसमें विद्यार्थियों ने विभिन्न योगासनों एवं प्राणायामों का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। उपस्थित सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया।

रामबाग में आयोजित वैदिक हवन में विश्व शांति, पर्यावरण संरक्षण एवं मानव कल्याण की कामना की गई। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष, नगर परिषद्, मनाली चमन कपूर जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समाजसेवी डोलाराम जी एवं मेहंदी रता जी ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज करवाई।

प्रधानाचार्या अनीता वर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि योग और यज्ञ भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं।

जो जीवों को देने योग्य पदार्थों का दाता और ग्रहण करने योग्यों का ग्राहक है, इससे उस ईश्वर का नाम **‘होता’** है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 05 जुलाई 2026 से 11 जुलाई 2026

समित्पाणि शिष्य के उद्‌गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः** छन्दः **अनुष्टुप्**।

● (**अग्ने**) हे यज्ञाग्नि! (**एताः**) ये (**ते**) तेरे लिए (**समिधः**) समिधाएँ [हैं], [इनसे] (**त्वं**) तू (**इत्**) निश्चय ही (**सम् इद्धः**) संदीप्त (**भव**) हो। (**अस्मासु**) हम [इनसे] (**त्वं**) तू (**इत्**) निश्चय ही (**सम् इद्धः**) संदीप्त (**भव**) हो। (**अस्मासु**) हम [ब्रह्मचारियों] में (**आयुः**) जीवन, [और] **आचार्याय** (आचार्य) के लिए (**अमृतत्वम्**) अमरत्व (**धेहि**) प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक–एक कर अग्नि में आहुति दूँगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य–रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध–अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल–वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु–शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि–समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● **महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती**

'एक ही रास्ता' पुस्तक में स्वामी जी इसके शीर्षक पर आध्यात्मिक दृष्टि कोण रख रहे हैं। परमात्मा एक है, उसको पाने का रास्ता भी एक है। सत्य के मार्ग का अनुसरण करना, असत्य से दूर भागना, अंधकार से दूर भागना, मृत्यु से दूर भागना आदि।

संसार आज विनाश की ओर गतिमय है। एक दूसरे को नष्ट करके स्वयं को सुखी व समृद्ध करना चाहता है, मानवता जल रही है, महाविनाश अत्यन्त वेग से सब कुछ नष्ट करने को दौड़ रहा है। इस भयावह दशा को समझाने के लिए स्वामी जी 'चरक' ग्रन्थ के लेखक महर्षि पुनर्वसु का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें संसार की वर्तमान विभत्स स्थिति को देखकर वे विनाश की भविष्यवाणी कर रहे हैं।

दुख कोई नहीं चाहता लेकिन कर्म दुख उत्पन्न करने के कर रहा है। सद्बुद्धि ही मानव को इस विनाश से बचा सकती है। कुछ भी न हो लेकिन यदि सद्बुद्धि के विकास के लिए सन्मार्ग पर चलने के लिए ही प्रयत्न कर लें तो विश्व कल्याण व मानव कल्याण सम्भव है....।

... अब आगे

दुनिया में माँगने की वस्तुएँ तो बहुत हैं–धन, दौलत, जायदाद, बीवी, बच्चे, मैं इनका विरोधी नहीं। वेद भी इनका विरोधी नहीं। परन्तु याद रक्खो, यदि बुद्धि न हो तो ये सब वस्तुएँ गड्ढे में गिरा देनेवाली हैं। धन माँग लिया आपने। आपने माँगा तो ईश्वर देगा अवश्य। वह तो दयालु है, माँगनेवाला चाहिए, वह अवश्य देता है। यदि इस धन को प्राप्त करके आप शराब पीने लग जाओ, दुराचार और व्यभिचार में फँस जाओ तो फिर यह धन तुम्हारे लिए कल्याण का कारण होगा या प्रलय का? ऊपर ले जायेगा या नीचे गिरा देगा? धन न सही; भक्ति माँग ली आपने। मिल गई भक्ति और आप बैठ गए किसी मन्दिर में; घर की सुध न बाहर की। शरीर का होश न संसार का। ऐसी भक्ति ऊपर उठायेगी या नीचे गिरायेगी? धन अच्छा है, भक्ति अच्छी है, स्वास्थ्य अच्छा है, सब कुछ अच्छा है; परन्तु तब तक जब तक वे मर्यादा में रहें और मर्यादा में रखने का काम बुद्धि करती है। न इधर न उधर, बीच से होकर ले चलती है वह।

नदियाँ जब तक किनारों की मर्यादा के अन्दर बहती हैं तब तक इनसे खेतियाँ हरी–भरी होती हैं। ग्राम और नगर बसते हैं, समृद्धि जाग उठती है। परन्तु यही नदियँा किनारों को छोड़कर, मर्यादा को तोड़कर, बाढ़ का रूप धारण कर जब गर्ज उठती हैं, तब बाढ़ आने लगती है; तबाही जाग उठती है। इसलिए हमारे शास्त्रों ने कहा है–

अति सर्वत्र वर्जयेत् !

'यह अति न करो। मर्यादा के अन्दर रहो। सीमा के अन्दर रहो।' संसार में जहाँ–जहाँ मर्यादा टूटती है, वहाँ–वहाँ तबाही और विनाश जागते हैं। जिस देश में मर्यादा न रहे, वह देश नष्ट हो जाता है। जिस समाज में मर्यादा न रहे वह समाज समाप्त हो जाता है और यह मर्यादा क्या है ?

एक नौजवान लड़का है, एक नौजवान लड़की। दोनों एक–दूसरे को चाहते हैं। लड़के के माता–पिता लड़की के माता– पिता से मिलते हैं, लड़की के माता–पिता लड़के के माता– पिता से। सब–कुछ देखकर दोनों की सगाई कर देते हैं। विवाह का दिन निश्चित होता है, बैण्ड और बाजे बजते हैं, सजे हुए बाराती आते हैं। फूलों की मालाएँ पहने हुए दूल्हा आता है। लड़की के पिता के घर में पहुँचते हैं सब लोग। लड़की पुष्पमाला से लड़के का स्वागत करती है। सुन्दर वेदी सजाई जाती है।

पवित्र मन्त्रों से विवाह–संस्कार कराया जाता है। दूसरे दिन मोटर या डोली में बैठकर लड़का और लड़की दोनों घर चले जाते हैं। सब ओर से बधाइयाँ मिलती हैं, सब ओर से आशीर्वाद मिलते हैं, सुख का संसार बस जाता है। यह है मर्यादा।

परन्तु यही लड़का और लड़की यदि मर्यादा को भूलकर घर से भाग निकलें, दिल्ली के रेलवे स्टेशन से गाड़ी में बैठकर मेरठ की ओर चल दें, तो शोर–गुल मच जाता है। पुलिस दौड़ती है। उन्हें पकड़ लेती है। हवालात में बन्द कर देती है। मुकद्दमा चलता है। मान मिट्टी में मिल जाता है। सुख नष्ट हो जाता है। दुःख जाग उठता है। अब बातें तो दोनों एक ही हैं। एक लड़का लड़की को ले गया या लड़की लड़के को ले गई। परन्तु पहली दशा में मर्यादा के अनुसार कार्य हुआ इसलिए सुख होता है, दूसरी दशा में मर्यादा तोड़ी गई इसलिए दुःख होता है।

इस मर्यादा को बतानेवाली, स्थिर रखनेवाली मेधा बुद्धि है; मर्यादा न रहे तो देश देश नहीं रहता, समाज समाज नहीं रहता, मानव मानव नहीं रहता। सब नष्ट हो जाते हैं। विनाश की ओर भागते हैं। इसलिए इस मन्त्र में मेधा को माँगने के लिए कहा गया है, जिससे माँगनेवाले का जीवन कल्याण से पूर्ण हो। अपना कल्याण करनेवाला हो, दूसरों का कल्याण करनवाला हो। प्रतिदिन तो हम माँगते हैं–

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।।

यजु. 32.14

'जिस मेधा के लिए देवता लोग तरसते हैं, रक्षा करने– वाले और विद्वान् लोग जिसकी कामना करते हैं, उस मेधा से ही अग्निदेव! हमें मेधावाला करो। आज करो।'

ऐसे कितने ही मन्त्र वेद भगवान् में आते हैं। बार–बार वे कहते हैं, प्रातः की किरणों से मेधा माँग। दोपहर के तपते सूर्य से मेधा माँग। सायंकाल के ढलते सूर्य से मेधा माँग। ऋग्वेद में यह बात आती है। अथर्ववेद के पाँचवें काण्ड का एक सारा सूक्त ही मेधा के लिए है। यदि मेधा न हो तो अमृत भी विष हो जाता है। सगे भाई आपस में लड़ पड़ते हैं। धन कष्टदायक बन जाता है। बुद्धि के बिना दुनिया में कुछ भी नहीं होता। यह बुद्धि भी तीन प्रकार की है–बुद्धि, सुबुद्धि, कुबुद्धि। परन्तु जिस बुद्धि की बात मैं करता हूँ, वह साधारण बुद्धि नहीं। बुद्धि से आगे चलकर मेधा आती है। मेधा से आगे प्रज्ञा जिसे प्रतिभा भी कहते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषियों के अन्दर यह प्रतिभा नाम की बुद्धि ही थी जिसने लोक और परलोक का ज्ञान उनके सामने रक्खा। इस तीन प्रकार की बुद्धि के अतिरिक्त एक चौथी प्रकार की बुद्धि भी है जिसे ऋतम्भरा कहते हैं। यह बुद्धि उस समय प्रकट होती है जब मनुष्य समाधि की अवस्था में पहुँच जाता है; तब केवल अटल सत्य दिखाई देता है–ऐसा सत्य जो कभी बदलता नहीं, जिसे ऋत कहते हैं। सत्य और ऋत में बहुत अन्तर है।

आप पूछते हैं–"घड़ी में क्या बजा है?" मैं उसे देखकर कहता हूँ, "9 बजकर 3 मिनट हुए हैं।" आधा घण्टे के बाद आप फिर पूछते हैं–"क्या बजा है?" मैं कहता हूँ–"9 बजकर 33 मिनट।" दोनों बार जो कुछ मैंने कहा वह सत्य अवश्य है परन्तु ऋत नहीं।

ऋत उस सत्य को कहते हैं जो सर्वदा एक–सा रहता है; प्रकृति के नियम की तरह अटल है। सूर्य रोशनी देता है, यह बात उस समय भी सत्य थी जब सूर्य पहले–पहल बना, आज भी सत्य है, करोड़ों वर्षों के बाद भी सत्य होगी। अग्नि जलाती है, यह बात सदा सत्य रही है, सदा सत्य रहेगी। इस अटल और न बदलनेवाली सचाई का नाम ऋत है। बुद्धि जब जाग उठती है, तब ऐसा ज्ञान हमारे सामने आता है जो कभी बदलता नहीं, जो महान् है, जिससे बड़ा और कोई ज्ञान नहीं।

परन्तु यह चारों प्रकार की बुद्धि प्राप्त कैसे होती है? यह बात है जो आपको बताना चाहता हूँ, जिसका आने–वाले सात दिनों में वर्णन करुँगा और उस मन्त्र का वर्णन करुँगा जिसे हम प्रतिदिन पढ़ते हैं, जिसे कुछ लोग गुरुमन्त्र कहते हैं, कुछ सावित्री मन्त्र, कुछ गायत्री और जिसे मैं महामन्त्र कहता हूँ। आइये ! सब मिलकर इस मन्त्र का उच्चारण कीजिए। बोलिए मेरे साथ–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

यजु. 36.3

देखो ! इस महामन्त्र में माँगनेवाला धन और दौलत को नहीं माँगता, जमीन और मकान को नहीं माँगता, बीवी और बच्चों को नहीं माँगता, शक्ति और साम्राज्य नहीं माँगता। केवल एक बात कहता है वह–"मालिक ! मेरी बुद्धि को प्रेरणा कर। उसे अपने मार्ग पर ले चल !" इस मन्त्र का पूरा वर्णन आगे चलकर करुँगा। आज केवल यही कहना चाहता हूँ कि ठीक मार्ग पर चलती हुई बुद्धि बहुत बड़ी चीज़ है। इससे सब–कुछ मिलता है। बिगड़ जाए तो बहुत तबाही करती है, सब कुछ नष्ट कर देती है–

जहाँ सुमति वहाँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति वहाँ विपति निदाना।।

सो ऐ दुनियावालो ! बुद्धि बिगड़ जाए तो सब कुछ बिगड़ जाता है। इसलिए 24 अक्षर के छोटे–से मन्त्र में, जिसे महर्षि दयानन्द ने महामन्त्र कहा, केवल बुद्धि के लिए याचना की गई है। 24 अक्षर का यह मन्त्र वैसे बहुत बड़ा नहीं। सामवेद में ऐसे–ऐसे मन्त्र हैं जो दस–दस लाइन के हैं। तब इस मन्त्र को महर्षि ने महामन्त्र कहा तो क्यों ? इसको इतनी उच्च पदवी मिली तो किसलिए ? इसके एक–एक शब्द में महानता है। एक–एक शब्द का रहस्य है, आपको बताऊँगा। सबसे पूर्व इसके शब्द ओ३म् की बात सुनिये।

यह ओ३म् तो गायत्री मन्त्र से भी छोटा है, परन्तु वेद, ब्राह्मण और उपनिषद् कहते हैं, यह सबसे बड़ा है। क्यों है ? कौन–सी बात है इसमें ? केवल तीन अक्षर का मन्त्र है–

अ, उ, म्

तीनों से मिलकर बना ओ३म्। जितनी महिमा इस छोटे–से मन्त्र की है, उतनी मैंने और किसी की नहीं देखी। वेद भी कहता है, इसका जाप करो–

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त ँ्ं शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतं स्मर।।

यजु. 40.15

'जाप करो। न केवल जीवन में, अपितु उस समय भी जब हवा, अग्नि और न मरनेवाले आत्मा से बना यह शरीर भस्म होनेवाला हो। जब कमजोरी या जाये, जब जीवनभर के लिए काम सामने आके खड़े हो जायें, उस समय भी जाप करो। उस ओ३म् का जाप करो, जो संसार को बनानेवाला है।'

परन्तु आज किसी से कहिए कि ओ३म् का जाप करो, तो वह कहता है "अवकाश नहीं मिलता।" उसके पास गप्पें मारने के लिए समय है, सिनेमा देखने को समय है, बेकार बातें करने को समय है, ओ३म् का जाप करने के लिए समय नहीं।

कुछ और लोग कहते हैं, "हमें तो ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास ही नहीं।" वास्तव में उन्हें विश्वास होता है परन्तु जाप करने में थोड़ा–सा परिश्रम करना पड़ता है, उससे छुट्टी पाने के लिए वे 'विश्वास नहीं' का बहाना कर देते हैं। कुछ और लोग कहते हैं, "जाप करने को जी तो चाहता है, ईश्वर में विश्वास भी है, परन्तु क्या करें मन नहीं लगता, भाग जाता है बार–बार।" कुछ और लोग कहते हैं–"मन भी लगता तो है कभी–कभी, परन्तु फिर तरह–तरह के विचार मन में आने लगते हैं, मन उचट जाता है।"

परन्तु देखो, घबराओ नहीं। कभी किसी हलवाई के पास उस समय जाओ जब वह खाण्ड की चाशनी तैयार करता है। वह बड़े–से कड़ाहे में खाण्ड और पानी आग पर चढ़ा देता है। थोड़ी देर में खाण्ड ढलती है।

कड़ाहे में उफान आने लगता है, तो हलवाई दूध का एक या आधा गिलास उसमें डाल देता है। खाण्ड के ऊपर मैल आ जाती है, उसे हटाता है, फिर उबालता है, फिर उफान आता है, फिर दूध डालता है, फिर मैल आती है, फिर हटाता है, ऐसा बार–बार करता है। दूध तो शुद्ध और साफ है, फिर ये मैल कहाँ से आती है?

हलवाई से पूछो। वह बतायेगा–यह मैल खाण्ड के अन्दर थी। बार–बार दूध डालने से वह कटती है। जब तक सारी मैल कट न जाये, खाण्ड भी दूध की भाँति शुद्ध और पवित्र न बन जाये, तब तक दूध डालना पड़ता है।

क्रमशः

नदियाँ जब तक किनारों की मर्यादा के अन्दर बहती हैं तब तक इनसे खेतियाँ हरी-भरी होती हैं। ग्राम और नगर बसते हैं, समृद्धि जाग उठती है। परन्तु यही नदियाँ किनारों को छोड़कर, मर्यादा को तोड़कर, बाढ़ का रूप धारण कर जब गर्ज उठती हैं, तब बाढ़ आने लगती है; तबाही जाग उठती है। इसलिए हमारे शास्त्रों ने कहा है-अति सर्वत्र वर्जयेत् !

'यह अति न करो। मर्यादा के अन्दर रहो। सीमा के अन्दर रहो।' संसार में जहाँ-जहाँ मर्यादा टूटती है, वहाँ-वहाँ तबाही और विनाश जागते हैं। जिस देश में मर्यादा न रहे, वह देश नष्ट हो जाता है। जिस समाज में मर्यादा न रहे वह समाज समाप्त हो जाता है और यह मर्यादा क्या है ?

गतांक से आगे...

समाज की व्यवस्था

● गंगा प्रसाद उपाध्याय

ज्ञानचन्द्र—*धन्य हैं पं. लेखराम जी !*

स्वामी जी—स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता थे। उन्होंने स्वतन्त्रता के संग्राम में भी भाग लिया था। उन्होंने देखा कि बहुत से मलकाने राजपूत जिनकी संख्या लाखों थी फिर से हिन्दू होना चाहते हैं। सन् 1923 ई. में हिन्दू शुद्धि–सभा की स्थापना आगरा में हुई, स्वामी जी उसके प्रधान बनाये गये। उन्होंने प्रमुख राजपूतों तथा राजाओं को तैयार किया कि वे इन शुद्ध होने वालों के साथ भोजन करें और उनको अपनी बिरादरी में मिला लें। स्वामी श्रद्धानन्द के तेज के आगे सब झुक गये। थोड़े से समय में 18 लाख से अधिक मलकाने राजपूतों की शुद्धि हो गई। इससे मुसलमानों में बड़ा जोश फैला। स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली में बीमार पड़े थे। 23 दिसम्बर 1926 को एक मुसलमान बन्दूक लेकर आया और उसने स्वामी श्रद्धानन्द जी की छाती पर गोली चलाई। स्वामी जी का बलिदान हो गया। **{पिस्तौल से उसने तीन फायर किये थे। 'जिज्ञासु'}**

शिवदत्त—*इतना बड़ा बलिदान ?*

स्वामी जी—हाँ ! आर्यसमाज सदा त्याग, तपस्या और बलिदान के लिये तैयार रहा है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने अपना बलिदान देकर यह शिक्षा दी थी कि धर्म पर बलिदान होना चाहिये। उनकी यह शिक्षा बराबर फूल–फल रही है। पर आर्यसमाज कभी द्वेष करना नहीं सिखाता। आर्यसमाज कभी यह नहीं कहता कि मुसलमान, ईसाई या अन्य धर्म वालों के साथ अन्याय किया जाए। वह न अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता खो सकता है और न दूसरों की धार्मिक स्वतन्त्रता में बाधा पहुँचाता है।

{उपाध्याय जी ने इसी विषय में एक स्थान पर बहुत सुन्दर लिखा है–"Wehate none but we love our own the most" अर्थात् हम किसी से भी घृणा नहीं करते परन्तु अपने अस्तित्व–अपनेपन से हमें सर्वाधिक प्यार है। 'जिज्ञासु'}

वह तो इस बात की शिक्षा देता है कि सब के साथ प्रेम का व्यवहार करो। अपने सिद्धान्तों की शिक्षा प्रेम से दो और इस पर कोई वैदिक धर्म में आना चाहे तो उसको अपने धर्म में मिला लो।

शिवदत्त—*धार्मिक स्वतन्त्रता के लिये आर्यसमाज ने और क्या किया ?*

स्वामी जी—हैदराबाद रियासत में आर्य और हिन्दुओं की धार्मिक स्वतन्त्रता छीनी जाने लगी। वहाँ के मुसलमानी राज ने आर्यमन्दिर बनाना, यज्ञशाला बनाना, यज्ञ करना, मन्दिरों पर झण्डे लगाना बन्द करा दिया। उस समय आर्यसमाज के नेता तपस्वी, त्यागवीर श्री महात्मा नारायण स्वामी थे। उन्होंने निजाम सरकार को चुनौती दी और जब सरकार ने इनकी बात न सुनी तो उन्होंने 30 जनवरी, 1939 को सत्याग्रह छेड़ दिया। दस हजार से अधिक सत्याग्रही निजाम की जेलों में बन्द हो गये। निजाम सरकार ने बड़ा जुल्म किया। 28 सत्याग्रहियों ने इस युद्ध में अपना बलिदान दिया। अन्त में आर्यसमाज की विजय हुई। रियासत में फिर से यज्ञ करने की आज्ञा मिल गई। आर्यसमाज ने यह सत्याग्रह हिन्दू सनातनी भाइयों की रक्षा के लिये भी किया था। इस प्रकार आर्यसमाज सदा से धार्मिक स्वतन्त्रता के लिये त्याग करता रहा।

शिवदत्त—*समाज की व्यवस्था के लिये और क्या आवश्यकता है ?*

स्वामी जी—समाज का कर्त्तव्य है कि हर व्यक्ति को अच्छी शिक्षा दी जाए। शिक्षा से ही मनुष्य मनुष्य कलाने का अधिकारी है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने शिक्षा पर बड़ा बल दिया था। जब उनका देहान्त हुआ तो उनके भक्त श्री पं. गुरुदत्त जी विद्यार्थी एम. ए., महात्मा हंसराज और लाला लाजपतराय ने लाहौर में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज खोला। त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज ने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया और जीवन भर बिना वेतन लिये कार्य करते रहे। उनके त्याग से प्रेरित होकर पंजाब, उत्तर प्रदेश में कई दयानन्द स्कूल खुल गये। अब तो हर बड़े नगर में आर्यसमाज की ओर से स्कूल खुले हुए हैं। इसमें पढ़ने वालों की संख्या लाखों में हैं। इन स्कूलों में स्कूली पढ़ाई के साथ साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है।

महात्मा मुंशीराम जी, (जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए) ने अपनी वकालत को छोड़कर कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की। हमारे देश में हजारों वर्ष पहले इसी प्रकार के गुरुकुल पाये जाते थे जिनमें रहकर विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। इन में विद्यार्थी घर नहीं जाने पाते। वे गुरु के पास रहकर ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करते हुए वेद शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त करते हैं। हमारे प्रान्त में श्री पं. भगवानदीन जी तथा महात्मा नारायण स्वामी जी के उद्योग से वृन्दावन में गुरुकुल बना। इस समय देश में बहुत से गुरुकुल शिक्षा दे रहे हैं।

आर्यसमाज ने स्त्रियों और कन्याओं की शिक्षा के लिये सब से अधिक उद्योग किया। आर्यसमाज की स्थापना से पहले स्त्रियों को शिक्षा न दी जाती थी। आर्यसमाज ने सबसे पहले कन्याओं के लिये पाठशालाएँ खोलीं। अब तो देश भर में सैकड़ों पाठशालाएँ हैं।

इसलिये यह आवश्यक है कि हर गाँव और नगर में लड़के लड़कियों के स्कूल खोलने चाहियें। अब तो सरकार से भी इस काम में बहुत मदद मिलती है। धनी व्यक्तियों को चाहिये कि विद्यादान के लिये दान दें क्योंकि कहा गया है कि **'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।'** सब दानों में विद्यादान उत्तम है।

ज्ञानचन्द्र— *आर्यसमाज ने शिक्षा का प्रचार करके समाज की बड़ी सेवा की है।*

स्वामी जी—समाज का एक और आवश्यक कर्त्तव्य है। वह है आचार विचार की व्यवस्था करना। समाज में युवक और युवतियाँ होते हैं उनके लिये उच्च आदर्श रखे जाने चाहिये। जिस समाज में धन वाला अधिक आदर पाता है और धार्मिक व्यक्ति कम, वह समाज नष्ट हो जाता है। **इसलिये समाज का यह धर्म है कि पतित व्यक्तियों को अधिक सम्मान नहीं देना चहिये।** फिर ऐसे प्रलोभनों को भी दूर करना चाहिये जिनसे आचार भ्रष्ट हों। उदाहरण के लिये शराब की दुकानों पर रोक लगानी चाहिये। शराब बेचने वाले तो चाहते हैं कि हर चौराहे पर शराब की दुकान खुल जाए। इस सम्बन्ध में समाज का यह कर्त्तव्य है कि कम से कम दुकान खुलें। फिर दुकान ऐसे स्थान पर खुलें जो सार्वजनिक जगह न हों। सरकार की सहायता से इन पर रोक लगाई जाए। इसी प्रकार जुए के स्थान, व्यभिचार के अड्डों आदि पर भी रोकथाम की जाए। आर्यसमाज तो इन कुरीतियों को दूर करने के लिये सदा से प्रयत्न करता आ रहा है। हर समाज के व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि समाज की सेवा करे।

ज्ञानचन्द्र—*स्त्रियों का समाज में कैसा स्थान होना चाहिये ? स्वामी दयानन्द का इस सम्बन्ध में क्या मत है ?*

स्वामी जी—स्वामी दयानन्द स्त्री जगत् के परमोद्धारक थे। भारतीय समाज में स्त्रियों का घोर अनादर होता था। श्री स्वामी जी ने बताया कि स्त्रियों का स्थान बड़ा ऊँचा है ?

मातृमान् पितृमानाचार्यवान्–पुरुषो वेद।

{शतपथ, 'आचार्यवान् पुरुषो वेद' ऐसा पाठ छा. उप. में है। 'जिज्ञासु'}

अर्थात् माता, पिता, गुरु जब तीनों उत्तम होते हैं तभी सन्तान ज्ञानवान् होती है। इसलिये स्वामी जी ने कन्याओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया। उन्होंने बताया कि लड़कों के समान लड़कियों की भी शिक्षा होनी चाहिये।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।

अथर्ववेद

अर्थात् कन्या ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके वेद शास्त्रों को पढ़ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश विद्वान् युवा पुरुष को प्राप्त होवे।

शिवचन्द्र—*क्या स्त्रियाँ भी वेद शास्त्र पढ़ सकती हैं ?* मैंने सुना है कि–

स्त्रीशूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः।

स्त्री और शूद्र न पढ़ें यह श्रुति है।

स्वामी जी—ये सब कपोल कल्पित बातें हैं। किसी प्रामाणिक ग्रन्थ का यह श्लोक नहीं। देखो श्रौतसूत्रादि में आया है–

इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्।

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। यदि स्त्री वेद शास्त्र नहीं पढ़ी होगी तो मन्त्र क्या बोलेगी? आर्यसमाज ने कन्याओं के लिये गुरुकुल और पाठशालाएँ स्थान–स्थान पर खोली हैं। लोगों को चाहिये कि इस प्रकार का प्रबन्ध गाँव–गाँव में हो जाये।

स्वामी जी ने यह भी शिक्षा दी कि कन्याओं का विवाह जल्दी न किया जाए जैसा कि समाज में प्रथा थी। उन्होंने बताया कि कन्याओं का विवाह कम से कम सोलह वर्ष की अवस्था में किया जाए जिससे वे परिवार का पालन भली प्रकार कर सकें।

शिवदत्त—*विवाह के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द का क्या मत है ?*

स्वाजी जी—स्वामी दयानन्द जी महाराज ने बताया कि ब्रह्मचर्य आश्रम व्यतीत करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करें। स्वामी जी बहु विवाह के विरुद्ध थे। उन्होंने बताया कि एक समय में एक से अधिक विवाह न किया जाए क्योंकि इस से गृह कलह बढ़ती है।

उन्होंने बताया–

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।

मनुस्मृति 3.60

अर्थात् जिस कुल में भार्या से भर्त्ता

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

कौन चैन की नींद नहीं सो सकते और उसके उपाय

● प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

इस विषय में हम विदुर जी के अनुसार प्रजागर उन्निद्रता–नींद न आने के कारण से पीड़ित जो लोग हैं, उन पर विचार करते हुए यथाशक्ति उपाय सुझाने का भी प्रयास करेंगे, जिससे कि ऐसे लोग चैन की नींद सो सकें। विदुर जी ने यद्यपि यहाँ उन्निद्रता से पीड़ित सभी प्रकार के लोगों को नहीं गिनाया है, पर तब भी प्रसंग के अनुकूल जो आवश्यक समझा, उसकी चर्चा कर दी है।

वैशम्पायन जी कहते हैं, धृतराष्ट्र ने द्वारपाल से कहा कि–"मैं विदुर जी से मिलना चाहता हूँ, इसलिये शीघ्र ही उन्हें यहाँ ले आओ।"

द्वारपाल विदुर जी को बुला लाए। विदुर जी जब आ गए, तो उनके आने पर धृतराष्ट्र बोले –

सञ्जयो विदुरं प्राप्तो गर्हयित्वा च मां गतः।
अजातशत्रोः श्वो वाक्यं सभामध्ये स वक्ष्यति।।
तस्याद्य कुरुवीरस्य न विज्ञातं वचो मया।
तन्मे दहति गात्राणि तदकार्षीत प्रजागरम्।।

वि. नी. 1.9–10

"हे विदुर ! सञ्जय आ गया है और मेरी ही निन्दा करके मुझे ही बुरा भला कह कर चला गया है। कल सभा के बीच में वह युधिष्ठिर की बात बतलायेगा। उस कुरुवीर युधिष्ठिर की बात मैं आज न जान सका, यह बात मेरे अंगों को जला रही है और उसी ने ही मुझे उन्निद्र अर्थात् उनींदा बना दिया है।"

जाग्रतो दह्यमानस्य श्रेयो यदनुपश्यसि।
तद्ब्रूहि त्वं हि नस्तात धर्मार्थकुशलो ह्यसि।।

– वि. नी. 1–11

जागते हुए तथा (चिन्ता से) परिदग्ध होते हुए–जलते हुए एवं बिस्तर पर करवटें बदलते हुए मनुष्य का जो भी कल्याण समझो, वह मुझे बताओ क्योंकि हे तात ! हे पूज्य ! आप ही हम सब में धर्म, अर्थ (राजनीति) के विषय में कुशल हो।

विदुर जी बोले–

अभियुक्तं बलवता दुर्बलं हीनसाधनम्।
हृतस्वं कामिनं चौरमाविशन्ति प्रजागराः।।
कश्चिदेतैर्महादोषैर्न स्पृष्टोऽसि नराधिप।
कश्चिच्च परवित्तेषु गृद्धयन्न परितप्यसे।।

– वि. नी. 1.13–14

हे राजन्! बलवान् से दबाए हुए, दुर्बल, साधनहीन, धन जिसका हर लिया गया हो या नष्ट हो गया हो, ऐसे **"हृतस्वम्"** मनुष्य, कामी तथा चोर को उन्निद्रता आ घेरती है। राजन् ! कहीं इन महान् दोषों के शिकार तो आप नहीं हो गए हैं ? अथवा कहीं दूसरों के धन–वैभवों एवं अधिकार आदि के लोभ के वशीभूत होकर तो आप सन्तप्त नहीं हो रहे हो ?

यहाँ जो उन्निद्रता के 6 कारण बताए गए हैं वे ही यहाँ हमारे विचार का अभीष्ट विषय हैं। अतः प्रकृत प्रसंग को छोड़कर उन्हीं पर हम विचार करना आरम्भ करते हैं। अब हम में से जो भी इस उन्निद्रता से, *उनीन्देपन* {पंजाबी में} से, अर्थात् सुख–चैन से नींद न आने के रोग से पीड़ित हैं, तो उन्हें चाहिए कि वे इन कारणों पर विचार करें और विचार करके उनसे बचने का हार्दिक प्रयत्न करें, ताकि वे आनेवाले जीवन में सुख–चैन से सो सकें।

मुझे विश्वास है कि जो भी व्यक्ति अपने जीवन में अपनी उपर्युक्त नानाविध पारिवारिक, शारीरिक और मानसिक समस्याओं की चिन्ताओं के कारण अच्छी तरह सो नहीं पाते, निश्चिन्त होकर भली–भाँति नीन्द नहीं कर पाते, उनके लिये यह सुझाव वरदान सिद्ध होगा।

1. अभियुक्तं बलवता

जो किसी बलवान् से दबाया हुआ हो उसे चिन्ता के कारण चैन से नींद नहीं आती है और इस प्रकार वह रातभर करवटें बदलता हुआ बैचेन हो रहा होता है।

ऐसी परिस्थिति में बजाए इसके कि वह मनुष्य चिन्ता में डूबा हुआ अपनी नींद हराम करे और अपने स्वास्थ्य की निरन्तर हानि करे, उसे चाहिए कि वह अपने को सबल बनाए, शारीरिक दृष्टि से, मानसिक दृष्टि से तथा आत्मिक दृष्टि से, अर्थात् तीनों दृष्टियों से वह अपने को बलवान् बनाए। यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो उस समय उसे किसी धर्मात्मा बुद्धिमान् एवं बलवान् किसी बड़े व्यक्ति का आश्रय या सहयोग ले लेना चाहिए अथवा यथाशक्ति पुरुषार्थ कर लेने पर उसका आत्मबल, मनोबल तथा शारीरिक बल बढ़ जायेगा, तथा उसकी यह चिन्ता किसी न किसी प्रकार से मिट जायेगी। चिन्ता के मिट जाने पर वह निश्चित्त होकर सुख की नींद सो सकेगा। इसके अतिरिक्त और भी जो उचित एवं आवश्यक उपाय हों, जैसे स्वाध्याय, सत्संग आदि, जिनसे कि उसे उन्निद्रता रूप रोग से मुक्ति मिल सके, तो उनको भी उसे अपना लेने का हार्दिक प्रयत्न करना चाहिये।

2. दुर्बलम्

जो मनुष्य शरीर से दुर्बल हो, कमज़ोर हो, खाया–पीया जिसे पचता न हो, पेट जिसका सदा खराब रहता हो, जिसको प्रायः अजीर्ण रहता हो या जिसका वायुप्रधान शरीर रहता हो, जिसके पेट में दर्द रहता हो आदि–आदि, तो ऐसे दुर्बल व्यक्ति को जैसे अन्य अनेक व्याधियाँ आ घेरती हैं, ऐसे ही उसको यह उन्निद्रता भी आ घेरती है। ऐसे अवस्था में सुख की नींद न सो सकने के कारण वह और भी क्षीण–कमज़ोर होता चला जाता है। इसलिये ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि वह औषधोपचार से, दवा और परहेज से, भ्रमण और व्यायाम से, अनुकूल भोजन–आच्छादन से, स्वाध्याय और सत्संग से, अनुकूल चिन्तन और मनन से, तथा ऋत, मित और हितकर, खाद्य एवं पेय पदार्थों के सेवन आदि से अपने को सभी दृष्टि से नीरोग–स्वस्थ और सबल बनाने का हार्दिक प्रयत्न करे ताकि उन्निद्रता–उनीन्देपन के रोग से वह मुक्त होकर सुख से सो सके।

3. हीनसाधनम्

जो व्यक्ति यथोचित साधनों से हीन हो उसे भी प्रजागर–उन्निद्रता आ घेरती है। जैसे रहने के लिये मकान और कार्य–व्यापार के लिये दुकान वा जीविका के लिये नौकरी आदि का न मिलना या शीत का निवारण करने के लिये अनुकूल वस्त्र, कम्बल और रजाई आदि का न होना, बुभुक्षा–भूख के निवारण के लिये अन्न आदि खाद्य पदार्थों का न होना, सन्तान के पालन–पोषण के लिये धन, अन्न, वस्त्र आदि का अभाव, शिक्षा–दीक्षा और स्वास्थ्य आदि के लिये नानाविध साधनों का अभाव, यदि कोई रुग्ण हो गया हो, तो उसके औषधोपचार, दवा और परहेज के लिये धन का अभाव, यदि कोई पुत्री युवावस्था को प्राप्त हो गई हो, तो उसके लिये सुयोग्य वर का न मिलना वा सुयोग्य वर के मिल जाने पर उसके विवाह आदि के लिये युग के अनुरूप समुचित धन आदि साधनों का अभाव इत्यादि भी मनुष्य को चिन्ताओं में डालकर उन्निद्रता का शिकार बना देता है।

ऐसी परिस्थिति में निरन्तर चिन्ता में मग्न रह कर सुख– चैन को समाप्त कर करवटें बदलते हुए अपने स्वास्थ्य को नष्ट करने की अपेक्षा अच्छा यही होगा कि वह व्यक्ति अपनी बुद्धि से कार्य लेकर पुरुषार्थ करके धन आदि साधनों का उपार्जन करे। फिर उस उपार्जित किये हुए धन आदि साधनों से जो कुछ भी सम्भव हो सके वह उसकी बुद्धि पूर्वक सम्यक् व्यवस्था करे, तथा उसमें ही सन्तोष का अनुभव करके वह प्रभु का हृदय से धन्यवाद करे।

कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि मनुष्य वास्तव में तो यथोचित साधनों से हीन नहीं होता, परन्तु वह फिर भी अपने समीपवर्ती लोगों को नाना प्रकार के ठाठ–बाठ के साधनों या सुख–सुविधाओं से सम्पन्न देखकर, अपने आपको उन साधनों और उन सुख–सुविधाओं से हीन अनुभव करता रहता है। जैसे कोई सोचता है कि अमुक की अपनी कोठी है, उसमें एयर कण्डीशण्ड कमरे हैं, ट्रांजिस्टर है, टेपरिकार्ड है, फ्रिज है, कपड़े धोने की मशीन हैं, सिलाई की मशीन है, मिक्सी है, इत्यादि–इत्यादि। अब चूँकि इन साधनों के अभाव में वह समाज में अपने आपको हीन अनुभव करता है तो उसे "कैसे इन सब सुख–सुविधाओं की पूर्ति हो, कैसे इन सब सुख–सुविधाओं को प्राप्त किया जाये, यह चिन्ता होने लगती है। इसी चिन्ता के परिणामस्वरूप उसकी शान्ति और चैन समाप्त हो जाता है। तब उस बेचैनी में उसकी नींद विदा हो जाती है और वह अशान्त मन हुआ हुआ रात भर करवटें बदलता रहता है और अगर कहीं थोड़ी बहुत नींद थकान के कारण उसे आ भी गई तो उसे वह अपना बड़ा सौभाग्य समझता है, परन्तु जागने पर उसके मन की स्थिति फिर वैसी ही हो जाती है जैसी कि पहले होती है।"

उपर्युक्त प्रवृत्ति यदि और अधिक बढ़ जाती है, तो वह व्यक्ति दूसरों के सुख–सौभाग्यों को देख–देख कर या सुन– सुन कर अपने भाग्य को कोसता रहता है, अपने माता–पिता और कुल को एवं बन्धु–बान्धवों को कोसता रहता है, भगवान् को कोसता रहता है, समाज एवं राज्य व्यवस्था को कोसता रहता है। यदि यह प्रवृत्ति इससे भी और आगे बढ़ती है, तो उस धन, अन्न आदि विशिष्ट साधनों से सम्पन्न लोगों से स्पष्टरूप से वह ईर्ष्या–द्वेष आदि करना आरम्भ कर देता है। इस प्रकार उसका स्वभाव और व्यवहार पूरी तरह बिगड़ जाता है। ईर्ष्या आदि के कारण उसमें इतना धैर्य तो रहता नहीं कि वह भी दूसरे मनुष्यों के समान पूर्ण मनोयोग से पुरुषार्थ करके धन कमाये और उन सुख–सुविधाओं को प्राप्त करे या जो प्राप्त है उस पर सन्तोष करे। पर वह तो अब यह सब कुछ एकदम पा लेना चाहता है, पर अब शीघ्रता से वह सब कुछ प्राप्त तो हो नहीं

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

गतांक से आगे...

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

श्रद्धेय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की परम्परा के प्रातः स्मरणीय विद्वान् श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक के जीवन और कार्यों पर यह शोधपूर्ण लेख डॉ. ज्वलन्त शास्त्री जी की सशक्त और खोज़ी लेखनी का अद्यतन विद्वानों और शोध छात्रों के लिए एक उपहार है। पाठक इस किंचित् लम्बे लेख से लाभान्वित हों, इस प्रयोजन से इसे धारावाहिक रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। यह लेख की चौथी किश्त है।

–सम्पादक

11. दयानन्द ग्रन्थ उद्धरण सूची

1959–1961 ई. में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा में अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष के रूप में मीमांसक जी ने स्वामी दयानन्द विरचित 40 ग्रन्थों में उद्धृत तथा व्याख्यात 25 सहस्र वचनों की सूची तैयारी की। लगभग एक लाख चिटें उद्धरणों की बनीं। सब चिटों को वर्गानुसार छाँटकर अकारादि क्रम से प्रेस कॉपी तैयार करनी प्रारम्भ की। उनको अकारादि क्रम से व्यवस्थित करके टंकारा पत्रिका में छपवाना आरम्भ किया। इस सूची में परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के विभिन्न संस्करणों में उद्धरणों के जो पाठ बदले गये थे, उनका भी निर्देश टिप्पणी में करना पड़ता था। 'टंकारा पत्रिका' वैदिक यन्त्रालय अजमेर से प्रकाशित होती थी। उसमें अभी उद्धरण सूची के कुछ ही पृष्ठ छपे थे कि मीमांसक जी की टिप्पणियों से रुष्ट होकर परोपकारिणी सभा ने सूची का प्रकाशन बन्द कर दिया। **{आत्म–परिचय (युधिष्ठिर मीमांसक), पृष्ठ–2201}**

12. महाभाष्य (हिन्दी व्याख्या– भाग–1, भाग–2, भाग–3)

पतंजलि मुनि विरचित पाणिनीय व्याकरण के शीर्षस्थ ग्रन्थ **'महाभाष्य'** के दो अध्यायों तक की विशद व्याख्या–1972 से 1976 के मध्य प्रकाशित। उ.प्र. शासन से पुरस्कृत।

13. मीमांसा–शाबर–भाष्य (हिन्दी व्याख्या)

जैमिनि मुनि प्रोक्त मीमांसा शास्त्र पर सबसे प्राचीन भाष्य शबर स्वामी का है। मीमांसक जी ने शाबर भाष्य के तीन चौथाई भाग–9 अध्याय तक की हिन्दी व्याख्या **'आर्षमतविमर्शिनी'** नाम से लिखी है जो 7 भागों में छपी। प्रथम भाग 1977 ई. में तथा सप्तम भाग 1993 ई. में प्रकाशित हुआ। मीमांसा दर्शन का सम्बन्ध विशेषतः वैदिक कर्मकाण्ड से है। आपने प्रथम भाग में **'उपोद्घात'** के रूप में **'शास्त्रावतारं मीमांसा'**, **'वेद–श्रुति–आम्नाय संज्ञा मीमांसा'**, **'श्रौत यज्ञ मीमांसा'** आदि निबन्धों के अन्तर्गत आने वाले 65 विषयों पर विस्तार से 188 पृष्ठों में चर्चा की है। पण्डित जी ने विविध परिशिष्टों तथा सहस्रों टिप्पणियों से युक्त ढाई हज़ार से भी अधिक पृष्ठों (2585 पृष्ठ) में मीमांसा शास्त्र के 3/4 भाग की सुविस्तृत व्याख्या लिखकर अपने मीमांसक नाम की अन्वर्थता सिद्ध कर दी।

14. विदुर नीतिः (महाभारत उद्योगपर्व– अन्तर्गता)

पदार्थ–विस्तृतव्याख्या–सहिता। पृष्ठ–403, प्रथम संस्करण–2028 वि.सं. (1968 ई.)।

15. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्

बालकाण्डम् (हिन्दी अनुवाद सहित), अनुवादक–श्री पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक, प्रथम संस्करण–2025 वि.सं., द्वितीय संस्करण–2052 वि.सं. (1996 ई.)। बृहद् आकार–पृष्ठ– 218।

16. हंस गीता–सानुवाद प्रकाशित– 2026 वि.सं.।

(महाभारत शान्तिपर्व, अध्याय 299 के अन्तर्गत)

17. संस्कृत धातुकोषः–द्वितीय संस्करण–1996 ई.।

18. शब्द रूपावली (बिना रटे शब्द–रूपों का ज्ञान कराने वाली) तृतीय सं.–1985 ई.।

19. संस्कृत पठन–पाठन की अनुभूत सरलतम विधि (द्वितीय भाग) प्र.सं. –2026 वि.।

20. संस्कृतवाक्यप्रबोधः

(अबोधनिवारणस्थ आक्षेपों के उत्तर सहित)

आज बाजार में English speaking Course के लिए अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। आज से 144 वर्ष पूर्व संस्कृत भाषा को वार्त्तालाप (बोलचाल) तथा दैनिक व्यवहार की भाषा बनाने के लिए ऋषि दयानन्द ने **'संस्कृत वाक्य प्रबोध'** की रचना की थी। इसका प्रथम संस्करण फाल्गुन शु. 11 वि.सं. 1936 में प्रकाशित हुआ। इसमें व्याकरण की अशुद्धियों को दर्शाने के लिए पं. अम्बिकादत्त व्यास ने अबोध निवारण पुस्तक छपवाई थी। उसमें लगभग 50 आक्षेप थे, जिनमें से 3 तीन आक्षेपों का उत्तर ऋषि दयानन्द ने एक पण्डित के नाम से दिया अथवा दिलवाया था। शेष आक्षेपों का उत्तर मीमांसक जी ने पाणिनीय व्याकरण एवं आर्ष वाङ्मय के अनुसार दिया। 'यह उत्तर संस्कृत–वाक्य–प्रबोध का एक बृहद् संस्करण प्रकाशित करके दिया–प्रथम संस्करण 1969 ई., द्वितीय संस्करण 1986 ई., चतुर्थ संस्करण 2010 ई.। ऋषि दयानन्द की इस पुस्तक को श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा में रखवाना चाहते थे। उप कुलपति डॉ. मंगलदेव शास्त्री भी सहमत थे। "उस पर काशी के पण्डितों ने कहा कि यह ग्रन्थ बहुत अशुद्ध है। स्वामी दयानन्द के जीवन काल में ही पं. अम्बिकादत्त व्यास ने इस पर आक्षेप किये थे, उनका न स्वामी दयानन्द ने उत्तर दिया और न किसी अन्य ने। अतः ऐसा अशुद्ध ग्रन्थ परीक्षा में नहीं रखा जा सकता।" **{संस्कृत वाक्य प्रबोध–स्वामी दयानन्द सरस्वती, सम्पादक–पं. युधिष्ठिर मीमांसक, प्राक्कथन–पृष्ठ–5, प्रथम संस्करण–1969 ई.}** इस घटना का ज्ञान होने पर मीमांसक जी ने अबोध निवारणस्थ समस्त आक्षेपों का उत्तर इस पुस्तक में पहली बार दिया है।

21. वेदाङ्ग प्रकाश

संस्कृत पठन–पाठन की परम्परा को सुप्रचलित करने के लिए ऋषि दयानन्द ने **वेदाङ्ग प्रकाश** के 14 भाग प्रकाशित करवाये। 1948–1949 में **'आर्य साहित्य मण्डल'** अजमेर में कार्य करते हुए मीमांसक जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती विरचित व्याकरण सम्बन्धी वेदाङ्ग प्रकाश के 14 भागों पर संशोधन कार्य किया। (वर्णोच्चारण शिक्षा का संशोधन और सम्पादन कार्य सम्भवतः मीमांसक जी ने नहीं किया क्योंकि **'यमो'** के स्वरूप पर उनका ग्रन्थकार से मतभेद था)। 1950 ई. मीमांसक जी 'आर्य साहित्य मण्डल' का कार्य छोड़कर गुरुजी (पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु) के इच्छानुसार काशी पहुँच गये। आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से मीमांसक जी द्वारा संशोधित **'वेदाङ्ग प्रकाश'** के सभी भाग मीमांसक जी की अनुपस्थिति में छपे, अतः ये ग्रन्थ शुद्ध नहीं छप सके। **{आत्म–परिचय (युधिष्ठिर मीमांसक), दशम परिशिष्ट–पृष्ठ–152}**

22. निरुक्त समुच्चयः वररुचिकृत यह नैरुक्त सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ है। निरुक्त टीकाकार स्कन्दस्वामी ने इसे बहुत स्थानों पर उद्धृत किया है। इसके एकमात्र अशुद्धि–बहुल व त्रुटित हस्तलेख से सम्पादन कार्य किया गया है। 'ओरियण्टल मैगजीन' (लाहौर) में प्रथम बार प्रकाशित हुआ–1938 ई., द्वितीय संस्करण 1965 ई., तृतीय संस्करण 1983 ई., चतुर्थ संस्करण–2003 ई.।

23. भागवृत्ति–संकलनम्–अष्टाध्यायी की अति प्राचीन विलुप्त **'भागवृत्ति'** नाम्नी वृत्ति के शतशः पाठ प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं। मुद्रित तथा लिखित लगभग 200 ग्रन्थों का पारायण करके इस वृत्ति के पाठों का संकलन करके टिप्पणियों सहित प्रकाशित किया है। प्रथम संस्करण 'ओरियण्टल मैगजीन' (लाहौर) 1940 ई., परिष्कृत संस्करण (सारस्वती सुषमा, काशी) 1955 ई., परिवर्धित संस्करण 1965 ई.।

24. दशपाद्युणादिवृत्तिः पाणिनीय व्याकरण सम्प्रदाय में यह वृत्ति अत्यन्त प्रामाणिक मानी जाती है। परन्तु इसके हस्तलेख अति दुर्लभ हो गये हैं। अत्यन्त प्रयास से इसके विविध स्थानों से अनेक हस्तलेख उपलब्ध करके शतशः अन्यग्रन्थों के साहाय्य से इस वृत्ति का सम्पादन किया गया है। आरम्भ में 55 पृष्ठों में संस्कृत भाषा में उणादिसूत्र और उनकी वृत्तियों का इतिहास दिया है। यह वृत्ति राजकीय संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी (वर्तमान संस्कृत विश्वविद्यालय) की **'सरस्वती–भवन ग्रन्थावली'** में प्रकाशित हुई है–1942 ई., द्वितीय संस्करण–1987 ई.।

25. शिक्षा–सूत्राणि–आचार्य आपिशलि, पाणिनि और चन्द्रगोमी के मूलभूत शिक्षासूत्रों का सम्पादन तथा प्रकाशन–1946 ई., परिष्कृत– परिवर्धित संस्करण–1967 ई., तृतीय संस्करण–1996 ई.।

26. क्षीर–तरङ्गिणी–पाणिनीय धातुपाठ के औदीच्य पाठ पर क्षीरस्वामी विरचित क्षीरतरङ्गिणी नाम्नी सबसे प्राचीन व्याख्या का सम्पादन। इसमें लगभग 700 महत्त्वपूर्ण टिप्पणियों में अनेक विषयों का स्पष्टीकरण है। आरम्भ में संस्कृत में 40 पृष्ठों में पाणिनीय धातुपाठ और उनके व्याख्या –ग्रन्थों का इतिहास लिखा गया है–1958 ई., द्वितीय संस्करण (पुनः परिशोधित)–1985 ई.।

27. दैवं पुरुषकारवार्तिकोपेतम्– पाणिनीय धातुपाठ पर प्राचीन अति प्रामाणिक ग्रन्थ का विविध प्रकार की लगभग 650 टिप्पणियों के साथ सम्पादन तथा प्रकाशन–1962 ई.।

28. काशकृत्स्न–धातुपाठ–काशकृत्स्न धातुपाठ की चन्नवीर कविकृत कन्नड टीका का संस्कृत रूपान्तर तथा सम्पादन–1965 ई.। ***क्रमशः***

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड, अमेठी (उत्तर–प्रदेश)–227405

गतांक से आगे...

चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवक)

● भद्रसेन

'चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु' शीर्षक से छपे विद्वान् लेखक के ट्रैक्ट में युवाओं की स्थिति, "धर्म", "शास्त्र", भाषा, जातबिरादरी तथा प्रदेश, ज्योतिष पर विचार पढ़ने के बाद अब वेश–भूषा और रिवाज पर चर्चा पढ़ें। –सम्पादक

वेश–भूषा और रिवाज

वस्त्रों का प्रयोजन सर्दी–गर्मी आदि मौसम से सुरक्षा रूप में जहाँ होता है, वहाँ सामाजिकता, सभ्यता के नाते भी शोभा, शिष्टता का ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है। अतः वस्त्र मौसम के अनुरूप, स्वच्छ, शालीन जहाँ हों, वहाँ उनका आकार, सिलाई, कटिंग का सम्बन्ध पूर्व निर्दिष्ट अपेक्षाओं के साथ जहाँ हो, वहाँ कारोबार की सुविधा भी एक कारण रहता है। पहले सिलाई की मशीनें न होने से धोती, चादर, साड़ी सरल, सुलभ पड़ती थीं। अब बुनाई–सिलाई की मशीनें सुलभ हैं। वस्त्रों की प्राप्ति, उन की सिलाई, कटिंग में कठिनाई नहीं, पर इतने से तात्कालिक परिस्थिति को सामने न रखकर धोती, चादर की दुहाई नहीं देनी चाहिए। इनके धारण मात्र से कोई शुभ, धार्मिक नहीं बन जाता। एक सैनिक अपने कारोबार की दृष्टि से वर्दी पहनता है, पर वह धार्मिकता, निष्ठा में इतने से न्यून नहीं हो जाता।

हाँ, अपने देश के उत्पादन, मजदूरी की दृष्टि से स्वदेशीपन उपयोगी है, पर यह कटिंग, ढाँचा, माडल विदेशी है, अतः अपनाना नहीं चाहिए। यह तर्क कोई उचित नहीं क्योंकि रेल, कार, बस, जहाज, रेडियो, दूरदर्शन आदि यन्त्रों के सैंकड़ों विदेशी माडल हम बिना नानुनच के स्वीकार कर रहे हैं। फिर पेंट, शर्ट, कोट पर ही नाक क्यों सिकोड़ी जाए? जबकि उनका वस्त्र भारत के खेतों, उद्यमों के कच्चे माल से बना, भारतीय किसान, मजदूर, कारीगर, दर्जी ने उसको तैयार किया अतः हर वस्तु की उपयोगिता, लाभ, सुविधा, सार्थकता रूपी सचाई के जचाव से परीक्षा होनी चाहिए न कि केवल प्राचीन और अपनेपन के आधार पर।

रिवाज, रीति शब्द ढंग के अर्थ में है, जिस समय जो ढंग जहाँ सार्थक है, वह तब वहाँ की रीति होती है। अतः सार्थकता ही रीति–रिवाज की कसौटी है। हाँ, समय कारोबार, परिस्थिति, मौसम बदलने से रीति–रिवाज में अन्तर आ जाना स्वाभाविक बात है, पर इससे हाय–तोबा नहीं मचाना चाहिए, अपितु सार्थकता से ही उसकी परीक्षा होनी चाहिए।

गुणवद्गुणवद्वा कुर्वता कार्यमादौ, परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन। अतिरभस कृतानां कर्मणामाविपत्ते र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः।।

नीति–100

लाभप्रद या हानिकारक अर्थात् हर कार्य को करने से पूर्व बुद्धिमान को पूरी तरह से उसके परिणाम को सोच लेना चाहिए। अन्यथा बिना सोचे समझे उतावली से किए गए कार्यों का परिणाम फल, प्रभाव काँटे की तरह आजीवन तड़पाने वाला होता है।

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्,
न च नवमित्यवद्यम्।
सन्तः समीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते,
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

मालविकाग्निमित्र श्लोक–2

इस सारे विश्लेषण का भाव यही है कि धर्म, शास्त्र, भाषा आदि का अपना–अपना महत्त्व है, उपयोगिता है, सार्थकता है, इनको कभी भी ओझल नहीं करना चाहिए। अतः सार्थकता ही कसौटी है, पर जब कोई आग्रही हो जाता है, तो वह मूलभावना को भुलाकर लकीर पीटने वाली बात करने लगता है। तब वह उस बात को किसी तरह से भी जाँच–पड़ताल नहीं करता, केवल यह अपना है, ऐसा होता आ रहा है, आदि के लगाव से उस के प्रति हठी, आग्रही बन कर जोश में भर उठता है। विचार की कोई बात सुनने के लिए तैयार नहीं होता है। युवकों के इसी जोश का होशियार लोग लाभ उठाकर उनको भड़का या भटका देते हैं। अतः हर स्थिति में धर्म, शास्त्र, भाषा आदि की मूलभावना, सार्थकता को हाथ से नहीं जाने देना चाहिये। तभी कोई युवक प्रगति कर सकता है, सफल हो सकता है। जैसे कि खेती, बागबानी में कोई तभी प्रगति करता है, सफल होता है, जब वह जड़ को सींचता है, न कि पत्तों को पानी देने से हरा–भरापन आता है, हरा–भरापन किसी पौधे पर स्थायी रूप से तभी आता है, जब उस की जड़ जम जाती है। ऐसा होने पर जब पौधा प्रगति करता है, तो यथासमय उस पर फूल–फल आते हैं। अतः प्रगति, सफलता चाहने वालों को सब से पहले उस उस के मूल को पहचानना चाहिए, क्योंकि उसको सींचकर, देखभाल करके ही अपनी प्रगति, सफलता की चाहना को पूर्ण किया जा सकता है। इसीलिए ही कहा जाता है–जड़ को सींचो, पत्तों को नहीं, और तभी किसी के श्रम, धन, समय का उपयोग सार्थक हो सकता है, अन्यथा पत्तों को पानी देने से सब कुछ अधूरा, बेकार होकर रह जाता है।

किसी प्रगति, सफलता का मूल क्या है ? इस की सीधी सी पहचान यही है कि जिसके बिना हरा–भरापन न आए। अतः प्रत्येक युवक को सर्वप्रथम जीवन विकास के सही मूलमन्तव्यों को समझ कर उनको ही अपनाना चाहिए जिससे उस की तीव्र इच्छा पूर्ण हो सके और जीवन सफल हो सके। जैसे–जैसे युवा अवस्था आती है, वैसे–वैसे शारीरिक विकास के साथ समझ भी बढ़ने लगती है और तब हर एक अपनी भलाई–बुराई समझने के योग्य होने लगता है। अतः अपनी समझ को सदा वर्तते रहना चाहिए।

सारांशः–इस विश्लेषण का मूलभाव यही है कि हर युवक को समझदार हो जाने पर अपनी और समाज की भलाई को सामने रख कर किसी कार्य, बात को सिरे चढ़ाने वाली सच्चाई को सबसे पहले समझना चाहिए फिर उस सच्चाई को अपना कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए, क्योंकि यह मानी हुई बात है, कि सच्चाई, सही ढंग को अपनाने से ही कोई कार्य पूर्ण होता है। तभी तो उपनिषद के ऋषि ने कहा है–**'सत्यमेव जयते सत्येन पन्था विततः'** मुण्डक 3, 6 अर्थात् सत्य की जीत तभी होती है, जब सत्य यथार्थ को अपनाया जाता है और सत्य से ही किसी का विकास होता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के चौथे नियम में कहा है "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए", अतः कुछ बनना चाहने वाले युवकों से अनुरोध है कि सच्चाई को समझें और अपनायें।

182 शालीमार नगर,
होशियारपुर–146001

☞ पृष्ठ 05 का शेष

कौन चैन की नींद ...

पाता। तब वह निराश होकर या तो अपने को हानि पहुँचा लेता है अथवा अन्यों की सुख–सुविधाओं में, सुख–सौभाग्यों में विघ्न उपस्थित करता हुआ उनकी उन सुख–सुविधाओं के स्रोतों को समाप्त करने में ही सुख अनुभव करता है। पर यह तो सुख कहाँ, सुख का आभास मात्र होता है। भला दूसरों को हानि पहुँचा कर भी कभी कोई सुखी हो सकता है ? कदापि नहीं। इससे तो मनुष्य की उल्टी और दुर्गति होती है इसलिये ऐसी परिस्थिति में मनुष्य को चाहिए कि वह विचार करे कि–

"मेरी तरह इस संसार में करोड़ों ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास सुख से रहने के लिये न तो सुन्दर कोठियाँ हैं, न एयर कण्डीशण्ड कमरे हैं, न कूलर हैं, न कारें हैं, न स्कूटर हैं, न टेलिविजन हैं, न वीडियो हैं, न रेडियो हैं, न फ्रिज हैं, न कपड़े धोने और सिलाई की मशीनें हैं, न मिक्सियाँ हैं। फिर भी वे जी रहे हैं, हँस रहे हैं, खा रहे हैं, पी रहे हैं, चैन से सो रहे हैं। मेरे पास तो साईकिल है, रहने को अपना निजी मकान है, बजाने को बाजा–हारमोनियम है, खाने–पीने और पहनने–ओढ़ने के लिये सुखद साधन भी पर्याप्त हैं। पर मेरे से भी आगे कई ऐसे व्यक्ति भी इस संसार में हैं जिनके पास इन साधनों का तो क्या कहना, दो समय का भोजन तथा तन ढकने के लिये यथोचित वस्त्र भी नहीं हैं, तब भी वे संसार में जी रहे हैं, हँस रहे हैं, गा रहे हैं, नाच रहे हैं, और रात को निश्चिन्त होकर सुख से सो रहे हैं।"

यह सब देख, सुन और विचार कर अपने जीवन और साधनों पर मनुष्य को सन्तोष करना चाहिए तथा साथ में उस प्रभु का इसके लिये सतत् धन्यवाद करते रहना चाहिए. जिसने कि कृपा करके अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार यह सब कुछ उसे प्रदान किया हुआ है। यदि इसमें भी सन्तोष न हो तो बजाय इसके कि मनुष्य बेचैन होकर अपनी नींद हराम करे, अच्छा यह है कि वह शक्ति भर पुरुषार्थ कर अर्थ का, धन का उपार्जन करे और फिर जो–जो कुछ उस उस उपार्जित धन से सम्भव हो सके, क्रय करके खरीद करके, उसी में ही उसका सन्तोष अनुभव करना आदि भी उस उन्निद्रता के निवारण का एक सुन्दर उपाय है। **क्रमशः**

'महान् विदुर के महान् उपदेश' से साभार

‘उदीर्ष्व नारि’ मंत्र और महर्षि दयानन्द : तथ्य, व्याकरण और पूर्वाग्रह से परे एक विमर्श

● डॉ. अमित शर्मा

हाल के वर्षों में सामाजिक माध्यमों और विभिन्न मंचों पर ऋग्वेद के प्रसिद्ध मंत्र **”उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकम्...”** (ऋग्वेद 10.18.8) को लेकर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती पर अनेक प्रकार के आरोप लगाए जाते हैं। कुछ आलोचक उन्हें ”वेद में प्रक्षेप करने वाला”, ”नियोग का प्रचारक” अथवा ”शोकाकुल विधवा के प्रति असंवेदनशील” तक कहने लगते हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि इन आलोचनाओं में प्रायः शास्त्रीय तर्कों की अपेक्षा भावनात्मक आवेश और व्यक्तिनिष्ठ पूर्वाग्रह अधिक दिखाई देता है। वास्तव में यह विषय केवल एक मंत्र के अर्थ का नहीं, बल्कि भारतीय बौद्धिक परम्परा, वैदिक व्याख्या–पद्धति और शास्त्रार्थ की मर्यादा का भी है। इसलिए आवश्यक है कि हम इस विषय का अध्ययन नारेबाज़ी अथवा कटाक्ष के आधार पर नहीं, बल्कि व्याकरण, निरुक्त, वैदिक प्रयोग, भाष्य–परम्परा और ऐतिहासिक संदर्भों के आलोक में करें।

वैदिक भाष्य परम्परा और मतभेद का अधिकार–भारतीय ज्ञान परम्परा में किसी भी ग्रन्थ का केवल एक ही अर्थ अंतिम नहीं माना गया। यास्काचार्य ने निरुक्त में स्पष्ट किया है कि वैदिक शब्दों के अनेक अर्थ हो सकते हैं–**”अनेकार्था वै धातवः।”** पाणिनि, पतञ्जलि, जैमिनि और शबरस्वामी की परम्परा में भी शब्दार्थ का निर्धारण केवल कोशगत अर्थ से नहीं, बल्कि प्रसंग, प्रयोजन, प्रकरण और युक्ति से किया जाता है। इसी कारण आचार्य सायण, उव्वट, महीधर, स्कन्दस्वामी और महर्षि दयानन्द जैसे भाष्यकार अनेक स्थानों पर एक–दूसरे से भिन्न अर्थ प्रस्तुत करते हैं। यदि भिन्न अर्थ प्रस्तुत करना ही अपराध माना जाए तो सम्पूर्ण भारतीय भाष्य–परम्परा ही दोषी सिद्ध हो जाएगी। महर्षि दयानन्द ने स्वयं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्पष्ट किया है कि वे वेद का अर्थ करते समय केवल परम्परा का अनुसरण नहीं करेंगे, बल्कि व्याकरण, निरुक्त, युक्ति, विज्ञान और वेदों के परस्पर सामंजस्य को भी ध्यान में रखेंगे।

मंत्र का मूल पाठ

‘उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं
गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं
पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ।।’

यह मंत्र अन्त्येष्टि प्रसंग में प्रयुक्त होता है। प्रश्न यह है कि इसका वास्तविक अभिप्राय क्या है?

‘उदीर्ष्व’ का अर्थ–‘उदीर्ष्व’ शब्द ‘ईर्’ (गत्यर्थक) धातु से बना है, जिसका अर्थ है–उठो, आगे बढ़ो, ऊपर उठो।

यहाँ सभी भाष्यकार इस बात पर लगभग सहमत हैं कि स्त्री को मृत्यु अथवा शोक की स्थिति से उठने का निर्देश दिया जा रहा है अर्थात् मंत्र का प्रथम संदेश ही जीवन की ओर उन्मुख होना है।

‘अभि जीवलोकम्’ पर विवाद–आलोचक कहते हैं कि ‘जीवलोकम्’ का अर्थ केवल ‘जीवित मनुष्यों का संसार’ है, इसलिए दयानन्द का ‘जीवित पति’ अथवा ‘जीवित पुरुषों के समाज’ की ओर संकेत करना अनुचित है। किन्तु यह तर्क पूर्णतः निर्णायक नहीं है।

‘लोक’ शब्द केवल भौतिक संसार का ही बोधक नहीं होता, बल्कि समूह, समुदाय, जनसमुदाय और सामाजिक व्यवस्था के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। अमरकोश में भी ‘लोक’ के अनेक अर्थ दिए गए हैं। अतः ‘जीवलोक’ का अर्थ ‘जीवितों का समाज’, ‘जीवित जनों का समुदाय’ अथवा ‘जीवनधर्मी सामाजिक व्यवस्था’ भी हो सकता है।

महर्षि दयानन्द ने इसी व्यापक अर्थ को ग्रहण किया है। उन्होंने यह नहीं कहा कि मंत्र में स्पष्ट रूप से ”दूसरा पति” शब्द लिखा हुआ है, बल्कि उन्होंने मंत्र के सामाजिक आशय को स्पष्ट करते हुए यह बताया कि विधवा को मृतक के साथ जीवन समाप्त नहीं मानना चाहिए।

‘उप शेषे’ पर व्याकरणिक विवाद–आलोचकों द्वारा सबसे अधिक बल ‘उप शेषे’ पर दिया जाता है। उनका कहना है कि यह क्रियापद है, इसलिए दयानन्द का अर्थ असंगत है।

यहाँ दो बातों को समझना आवश्यक है–

पहली बात, वैदिक संस्कृत में पदपाठ, स्वर–विन्यास और अर्थ–विन्यास सदैव एक ही प्रकार से नहीं चलते। अनेक स्थलों पर भाष्यकारों ने पद के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ को ग्रहण किया है। दूसरी बात, महर्षि दयानन्द की व्याख्या–पद्धति केवल पदपाठ पर आधारित नहीं है। वे यास्कीय निरुक्त–पद्धति का अनुसरण करते हुए धात्वर्थ, प्रकरण और प्रयोजन को भी महत्त्व देते हैं।

अतः केवल स्वर–विवेचन के आधार पर उनकी सम्पूर्ण व्याख्या को ”मनगढ़ंत” कह देना न्यायसंगत नहीं है।

‘दिधिषोः’ शब्द का महत्त्व–

इस मंत्र में ‘दिधिषोः’ शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वैदिक कोशों तथा निरुक्तीय परम्परा में ”दिधिषु” शब्द का सम्बन्ध पुनर्विवाह अथवा पुनः वैवाहिक अभिलाषा रखने वाले पुरुष से भी जोड़ा गया है। यही कारण है कि अनेक वैदिक विद्वानों ने इस मंत्र में विधवा के पुनः सामाजिक जीवन से जुड़ने की संभावना देखी है। महर्षि दयानन्द की व्याख्या इसी आधार पर निर्मित है। इसलिए यह कहना कि उन्होंने बिना किसी वैदिक आधार के अचानक नियोग का विचार आरोपित कर दिया, तथ्यात्मक दृष्टि से उचित नहीं है।

क्या सायणाचार्य की व्याख्या ही अंतिम सत्य है ?– सायणाचार्य ने इस मंत्र का अर्थ मुख्यतः इस प्रकार किया है कि स्त्री अपने पुत्र के संरक्षण हेतु जीवित रहे और मृत पति का अनुसरण न करे। यह व्याख्या अपने स्थान पर सम्माननीय है।

किन्तु यह प्रश्न भी विचारणीय है कि क्या सायणाचार्य स्वयं सर्वत्र अंतिम प्रामाणिकता के अधिकारी हैं?

स्वयं स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, पण्डित लेखराम, पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक तथा अनेक आधुनिक वैदिक विद्वानों ने सायणाचार्य के अनेक अर्थों से असहमति व्यक्त की है। यदि सायणाचार्य को स्वतंत्र व्याख्या का अधिकार है तो महर्षि दयानन्द को भी वही अधिकार प्राप्त है।

नियोग का वास्तविक स्वरूप–महर्षि दयानन्द के आलोचक अक्सर यह प्रचारित करते हैं कि वे प्रत्येक विधवा को नियोग के लिए प्रेरित करते थे। **यह तथ्य नहीं है। सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में वर्णित नियोग व्यवस्था विशिष्ट परिस्थितियों के लिए है।** वहाँ अनेक प्रतिबन्ध, नैतिक मर्यादाएँ और सामाजिक नियम भी निर्धारित किए गए हैं। महर्षि दयानन्द ने नियोग को भोग–विलास का साधन नहीं, बल्कि वंशरक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व की व्यवस्था माना है।

इसलिए यह चित्रण कि ”पति की लाश के सामने खड़ी स्त्री को दूसरा पुरुष चुनने का आदेश दिया जा रहा है”, वस्तुतः मूल ग्रन्थ की अपेक्षा आलोचक की कल्पना अधिक प्रतीत होती है।

महर्षि दयानन्द का स्त्री–दृष्टिकोण– यदि किसी व्यक्ति के विचारों का मूल्यांकन करना हो तो उसके सम्पूर्ण जीवन को देखना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने कहा–**”स्त्रियों को भी वेद पढ़ने और पढ़ाने का उतना ही अधिकार है जितना पुरुषों को।”** उन्होंने बाल–विवाह का विरोध किया। उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया। उन्होंने स्त्री–शिक्षा के लिए अनेक संस्थाओं को प्रेरित किया।

उन्होंने स्त्री को केवल परिवार की वस्तु न मानकर समाज का समान अधिकारयुक्त सदस्य माना। ऐसे व्यक्ति पर यह आरोप लगाना कि वह शोकाकुल स्त्री की संवेदना नहीं समझता था, उसके जीवन–संघर्ष की उपेक्षा करना है।

शास्त्रार्थ की मर्यादा–महर्षि दयानन्द स्वयं कठोर शास्त्रार्थ करते थे, किन्तु वे प्रमाण और तर्क की अपेक्षा रखते थे।

भारतीय संस्कृति में मतभेद को स्वीकार किया गया है, किन्तु व्यक्तिनिन्दा को नहीं। ऋग्वेद का उद्घोष है–**”आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।”** (ऋग्वेद 1.89.1) अर्थात् हमारे पास सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार आएँ। जब हम किसी वैदिक मंत्र पर चर्चा करें तो हमारा उद्देश्य सत्य की खोज होना चाहिए, न कि किसी महापुरुष के प्रति घृणा फैलाना।

‘उदीर्ष्व नारि’ मंत्र की व्याख्या पर मतभेद सम्भव हैं और भविष्य में भी रहेंगे। सायणाचार्य का अर्थ सम्माननीय है, तो महर्षि दयानन्द का अर्थ भी गंभीर अध्ययन का अधिकारी है।

परन्तु यह कहना कि महर्षि दयानन्द ने जानबूझकर वेद में प्रक्षेप किया, अथवा उन्होंने शोकाकुल स्त्री का उपहास किया, वस्तुनिष्ठ अध्ययन की अपेक्षा पूर्वाग्रह का परिणाम अधिक प्रतीत होता है। वास्तविक विद्वत्ता का मार्ग यह है कि हम प्रमाण प्रस्तुत करें, तर्क करें, शास्त्रार्थ करें, परन्तु सम्मान और मर्यादा का परित्याग न करें। महर्षि दयानन्द का समर्थन हो या विरोध– दोनों ही स्थिति में सत्य, तर्क और शास्त्रीयता का पालन आवश्यक है। यही वैदिक परम्परा की आत्मा है और यही किसी भी बौद्धिक विमर्श की वास्तविक कसौटी।

सहायकाचार्य, संस्कृत विभाग,
डी.ए.वी. शताब्दी महाविद्यालय, फरीदाबाद

कल्याणकारी वाणी का प्रयोग करें

● धर्मवीर

वेद में एक मंत्र आया है **मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया।। ३।।**

इस मन्त्र में एक वाक्य आया है–वाचं वदत भद्रया वाणी सभी बोलते हैं, वाणी के प्रयोग दोनों हो सकते हैं– हानि के, लाभ के, मृदु के, कठोर के, सत्य के, असत्य के। कोयल की भाँति सभी की वाणी मीठी होती, सब एक–दूसरे के साथ मधुर वाणी का व्यवहार करते तो किसी को यह कहने की आवश्यकता ही नहीं होती कि मधुर वाणी बोलनी चाहिए। यदि ऐसा होता तो अच्छा नहीं होता, क्योंकि तब मेरा कोई अधिकार ही नहीं होता, मुझे मेरी इच्छा का प्रयोग करने का अवसर ही नहीं मिलता, विवेक की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। कोई दूसरे से अलग नहीं होता, कोई किसी से अच्छा तो किसी से बुरा भी नहीं होता। इस परिस्थिति में मेरे होने का अर्थ ही क्या होता ? मेरी सत्ता मेरे अधिकार से प्रकट होती है, मेरा अधिकार मेरे अस्तित्व का प्रकाशक है।

जितना मुझे अच्छा करने का अधिकार है, उतना ही मुझे बुरा करने का अधिकार भी है। उसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता, इसी कारण उनके फल को भी मुझसे कोई अलग नहीं कर सकता। यही कारण है कि मुझे मेरे कर्म का फल मिलता है, क्योंकि वे मेरे हैं, चाहे वे अच्छे हैं, चाहे वे बुरे। इसीलिए उपदेश देने की आवश्यकता पड़ती है। उपदेश से मेरे विवेक पर प्रभाव पड़ता है, मैं अपने विचार को बदल सकता हूँ। इसी प्रक्रिया को संकल्प – विकल्प कहा गया है। जब मनुष्य सोचता है कि मैं यह करुँगा तो मुझे लाभ होगा। मैं सोचता हूँ– मैं ऐसा करुँगा तो मेरी हानि होगी, इसलिये मैं ऐसा नहीं करुँगा। यह मेरी दशा, मेरे निर्णय की भूमिका है। मैं निश्चय कर लेता हूँ, तब वह मेरा निर्णय होता है, उसका फल अच्छा या बुरा मेरा ही होता है।

वाणी भी मेरी है, मैं इसका अच्छा या बुरा कैसा भी उपयोग कर सकता हूँ। जब अच्छा उपयोग करता हूँ तो मुझे अच्छा फल मिलता है, बुरा उपयोग करता हूँ तो बुरा फल मिलता है। मुझे मेरी वाणी के अच्छे–बुरे का ज्ञान होना चाहिए। वेद कहता है– लाभ के लिए, पुण्य के लिये भद्र वाणी का प्रयोग करना चाहिए। भद्र का अर्थ शरीर के लिए वर्तमान में लाभप्रद और मन, बुद्धि, आत्मा के लिए शान्तिप्रद होना है। यदि ऐसा नहीं तो केवल मधुर वाणी से भी कार्य चल सकता था। हम समझते हैं कि मीठा बोलना ही पर्याप्त है, पर केवल मीठा नहीं, वह परिणाम में भी लाभप्रद होना चाहिए। इस मन्त्र भाग में बोलने वालों के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है, अर्थात् परिवार में सभी सदस्यों को एक–दूसरे के साथ कल्याणकारिणी वाणी का प्रयोग करना चाहिए। वाणी का प्रभाव ही व्यवहार को प्रभावित करता है। मनुष्य आदर से बोलता है तो उसे प्रत्युत्तर में अनुकूल ही उत्तर प्राप्त होता है। यदि कठोरता से, असभ्यता से बोलता है तो निकटस्थ व्यक्ति भी अपमान का अनुभव करता है।

वाणी भी मेरी है, मैं इसका अच्छा या बुरा कैसा भी उपयोग कर सकता हूँ। जब अच्छा उपयोग करता हूँ तो मुझे अच्छा फल मिलता है, बुरा उपयोग करता हूँ तो बुरा फल मिलता है। मुझे मेरी वाणी के अच्छे-बुरे का ज्ञान होना चाहिए। वेद कहता है- लाभ के लिए, पुण्य के लिये भद्र वाणी का प्रयोग करना चाहिए। भद्र का अर्थ शरीर के लिए वर्तमान में लाभप्रद और मन, बुद्धि, आत्मा के लिए शान्तिप्रद होना है। यदि ऐसा नहीं तो केवल मधुर वाणी से भी कार्य चल सकता था। हम समझते हैं कि मीठा बोलना ही पर्याप्त है, पर केवल मीठा नहीं, वह परिणाम में भी लाभप्रद होना चाहिए।

वाणी के सम्बन्ध में महाभारत में एक शिक्षाप्रद प्रसंग आया है। युधिष्ठिर युद्धभूमि में घायल होकर शिविर में चिकित्सा के लिये उपस्थित हुए हैं। अर्जुन को बड़े भाई के घायल होने का समाचार मिलता है, वह तत्काल युद्ध छोड़ भाई को देखने शिविर में पहुँचता है। युधिष्ठिर ने पूछा– क्या युद्ध जीत लिया? अर्जुन ने कहा– नहीं। युधिष्ठिर ने अर्जुन के गाण्डीव को धिक्कार कह दिया। अर्जुन को क्रोध आया, उसने अपने बड़े भाई को मारने के लिए तलवार उठा ली। अर्जुन ने कहा– मेरी प्रतिज्ञा है कि जो गाण्डीव को धिक्कारेगा, उसके प्राण हरण करुँगा। श्री कृष्ण ने समझाया– मारना केवल तलवार से नहीं होता, बड़े भाई को 'तू' कह दे तो भी वह मर जायेगा। अर्जुन ने कह तो दिया, परन्तु फिर सोचने लगा कि उसने बड़े भाई का अपमान किया है। उसने कहा– अब इस अपराध के लिए मैं मरुँगा। श्री कृष्ण ने कहा– क्यों मरते हो? मरना भी कई प्रकार का होता है। मनुष्य के लिए आत्म–प्रशंसा भी मरने के समान है, तुम अपनी प्रशंसा स्वयं करो, मर जाओगे। मनुष्य वाणी से ही मरता है और वाणी से ही जीवन पाता है, अतः वेद ने कल्याणकारिणी वाणी के प्रयोग करने का आदेश दिया है।

लेखक की पुस्तक
'वेद प्रवचन' से साभार

☞ पृष्ठ 04 का शेष

समाज की व्यवस्था

और पति से पत्नी भले प्रकार प्रसन्न रहते हैं उसी कुल में सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। जहाँ कलह होता है वहाँ दुर्भाग्य और दरिद्रता आती है।

ज्ञानचन्द्र–***आर्यसमाज विधवा विवाह कराता है ?***

स्वामी जी–इसमें क्या हानि है ? पुरुष अपनी स्त्री के मरते ही दूसरा विवाह चट से कर लेते हैं, पर वे इस बात की आशा करते हैं कि बेचारी कन्याएँ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेंगी। यह स्त्री जाति के साथ बड़ा अन्याय है। इसलिये जो विधवा ब्रह्मचर्य व्रत न रख सकें उनके विवाह का प्रबन्ध कर देना चाहिये। ऐसा न करने से विधवाएँ कुमार्ग पर चली जाती हैं और समाज में बड़ा अनादर होता है, अतः समाज के नैतिक स्तर को ठीक रखने के लिये यदि विधवाओं का विवाह कर दिया जाए तो कोई हानि नहीं। पर जो विधवाएँ जीवन भर अपना धर्म निभा सकें वे अविवाहित रहें।

मनु महाराज ने लिखा है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः।

मनुस्मृति 3.56

जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है वहाँ सब प्रकार का आनन्द रहता है, जहाँ स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता वहाँ दुःख ही दुःख रहता है।

कल्याणचन्द्र–***समाज के ऊपर कभी आपत्तियाँ आ जाया करती हैं। यह क्यों आया करती हैं ? उनसे कैसे छुटकारा हो सकता है ?***

स्वामी जी–संसार में हर प्राणी तीन प्रकार के तापों से दुःखी है। आध्यात्मिक ताप. आधिभौतिक ताप और आधिदैविक ताप।

आध्यात्मिक ताप या दुःख वह हैं जो प्राणी के अपने मन या शरीर की दुर्बलता के कारण होते हैं। जैसे ज्वर आना, सिर में दर्द होना, दस्त हो जाना या मन में ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध का होना।

आधिभौतिक ताप वह है जो दूसरे प्राणियों से पहुँचते हैं जैसे साँप काट ले, दुश्मन हमला कर दे या चोर डाकू माल चुरा कर ले जावे या कोई झूठा मुकदमा चला दे।

आधिदैविक ताप वह है जो दैवगति से आते हैं जैसे बिजली गिरना, अति वर्षा होना, भूकम्प आना, सूखा पड़ना आदि।

तीनों तापों से बचने के लिये मनुष्य प्रयत्न किया करता है जो सब से अधिक सफलता प्राप्त कर ले उसी को पुरुषार्थी कहते हैं।

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।
कपिल मुनि का संख्या दर्शन अध्याय। सूत्र।

इन तीन प्रकार के दुःखों का कारण है अविद्या या अज्ञान। जब मनुष्य को ज्ञान नहीं होता तो उसके मन में क्रोध या बुरी वासना उठती है, उसका आचरण बिगड़ जाता है, वह परहेज नहीं, करता इसलिये ज्वर आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जब समाज में अज्ञान बढ़ जाता है तब परस्पर ईर्ष्या, डाह, जलन और वैर भाव बढ़ जाते हैं जिससे लोग चोरी, ठगी और मार–पीट करते हैं।

जब अज्ञान के कारण पाप बढ़ता है तो ईश्वर भी कोप करता है और भूकम्प, सूखा, वर्षा आदि तापों को संसार में भेज देता है। इन सबसे बचने का एक ही मुख्य उपाय है कि स्वयं धार्मिक बनें तथा समाज को भी नैतिक मार्ग पर चलावें।

प्रस्तुति
प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु
'गंगा ज्ञान सागर भाग दूसरा' से साभार

पत्र/कविता

भगवती चरण वोहरा

पिता अंग्रेज़ी शासन का समर्पित नौकरशाह (Loyal Servant) तथा 'रायबहादुर' का ख़िताब जबकि पुत्र 1919 में जलियाँवाला बाग में हुए नरसंहार से क्षुब्ध, असहयोग आंदोलन से जुड़ गया। गाँधी जी के आंदोलन वापस लेने पर नेशनल कॉलिज लाहौर से ग्रेजुएशन की पढ़ाई करते समय प्रो. जयदेव विद्यालंकार ने जीवन की धारा ही बदल दी। मन देश की आजादी के लिए हिलोरें मारने लगा। **'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन'** के सम्पर्क में आने से पत्नी दुर्गावती देवी सहित राष्ट्र की सेवा में अन्तिम साँस तक पूरी निष्ठा से जुड़ गये भगवती चरण वोहरा।

स्वतंत्रता के प्रति निर्भीक, बौद्धिक दिग्गज तथा प्रतिबद्ध भगवती चरण वोहरा का जन्म 15 नवम्बर 1903 को लाहौर के अति सम्पन्न परिवार में हुआ। इनके पिता शिवचरण वोहरा रेलवे में उच्च अधिकारी थे, जिनको सरकार की उत्तम सेवा के लिए 'रायबहादुर' की उपाधि 1919 में दी गई। उनकी लाहौर में अच्छी सम्पत्ति थी।

भगवती चरण वोहरा ने इन्टर की परीक्षा साइन्स से 1921 में एफ.सी. कॉलिज से उत्तीण की। गाँधी जी ने जब असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया तो युवा भगवती चरण ने भी इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। उनका विवाह इलाहाबाद की दुर्गावती देवी से 1918 में सम्पन्न हुआ। इस युगल को गृहस्थ जीवन व क्रान्ति पथ पर चलते हुये 3 दिसम्बर 1925 को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम रखा शचीन्द्र वोहरा।

'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन' के भगवती चरण विचारक व बौद्धिक सदस्य थे। वे इसके पहले घोषणा पत्र के सह–लेखक के साथ ही 'नौजवान भारत सभा' के सह–संस्थापक भी थे। उनका मानना था–Revolution meant a total transformation of Economic, Political, Socio-cultural and Psychological realms in India.

बम बनाने की कला में निपुण भगवती चरण वर्मा ने 23 दिसम्बर 1929 को वायसराय लार्ड इरविन की ट्रेन को पलटने की योजना बनाई। दिल्ली के पुराने किले के पीछे रेल की पटरी के नीचे बम दबाये गये। आज़ाद चाहते थे बम विस्फोट रोक दिया जाये क्योंकि इसी दिन 'इरविन–गाँधी वार्ता' होनी थी, सम्भवतः कोई सकारात्मक परिणाम सामने आ जाये। वोहरा भी सहमत हो गये, किन्तु यशपाल, हंसराज, इन्द्रपाल, लेखराज आदि ने कदम पीछे नहीं खींचे। आगरा से आ रही वायसराय की ट्रेन के नीचे बम भी फटे लेकिन 45 मील की रफ्तार से आती ट्रेन सुरक्षित निकल गई। सभी क्रान्तिकारी दिल्ली से बाहर सकुशल निकलने में सफल रहे।

गाँधी जी इतने चिढ़ गये कि उन्होंने एक लेख लिखा 'Cult of Bomb' और वायसराय के बचने पर खुशी व्यक्त की। भला भगवती चरण वोहरा जैसा बौद्धिक व्यक्ति कब चुप रहने वाला था, उन्होंने भी प्रत्युत्तर में 'The Philosophy of Bomb' लिखा। दोनों विचारधारा भले ही अलग–अलग थीं, पर उद्देश्य तो एक ही था–**भारत माँ की स्वतंत्रता।**

भगतसिंह को जेल से छुड़ाने का प्रयास चन्द्रशेखर आज़ाद अपने साथियों के साथ कर रहे थे, किन्तु भगतसिंह इसके लिए तैयार नहीं थे। फिर भी क्रान्तिकारियों की योजना जेल में बम फेंकने की थी। बम भी बनाया गया।

28 मई 1930 की वह काली रात, लाहौर के रावी के तट पर घने जंगल में बम परीक्षण करते समय भगवतीचरण वोहरा का हाथ उड़ गया। कोई उपचार की व्यवस्था नहीं, अत्यन्त रक्त बहने से उन्होंने अपनी अन्तिम साँस ले ली। साथियों ने इस वीर को वहीं दफना दिया, किसी को पता भी नहीं चला। याद आते हैं उनके शब्द "I want to die in such a place and manner that no one may know of it and shed tears". ईश्वर ने उनकी बात को स्वीकार तो किया मगर जीवनसंगिनी दुर्गा भाभी व साथी क्रान्तिकारियों के आँसू तो अवश्य बहे होंगे, महान साथी की असमय विदाई पर।

स्वामी गुरुकुलानन्द 'कच्चाहारी'
'भारत में अग्रेज़ी साम्राज्य और स्वतन्त्रता संग्राम' से साभार

****

आई बनकर वरदान तीखी छुरियों की धार

तेरी जय जय जयकार, गावे सारा संसार।
जागा सारा संसार, तेरी सुनकर हुँकार।।
निर्भय योद्धा नरनामी, वैदिक पथ के अनुगामी।
दुःखड़े जाति के टारे, प्यारे ज्ञानी बलिदानी।।
सच्चे ईश्वर–विश्वासी, झेले सङ्कट हज़ार....
तेरे साहस पै वारी, तुझ पर प्यारे बलिहारी।
तू था ऋषियों की तान, दुनिया जाने यह सारी।।
तजकर सारे सुख साज, कीना जीवन सञ्चार.....
युग ने करवट जो बदली, काँपे सारे अन्यायी।
रोते देखे मिर्जाई, तर गई तेरी तरुणाई।।
आई बनकर वरदान तीखी छुरियों की धार....
तेरा सुनकर सिंहनाद, जागे सोय अरमान।
शत्रु हो गये हैरान, आई जाति में जान।।
परहित जीना मरना, तेरे जीवन का सार......
तेरा ऋण कितना भारी, जग के सच्चे हितकारी।
करते याद नर–नारी, चावा[1] पायल की गाड़ी।।
चलती गाड़ी से कूदे, लेकर उर में अंगार......
पथिक निराली देखी, तेरी वीरों में शान।
करते मिलकर गुणगान, करते हम सब अभिमान।।
देता जन–जन को जीवन, तेरा निर्मल आचार......
रहना सेवा में तत्पर, चाहे दिन हो या रात।
हम हैं मस्तक झुकाते, सुन–सुन तेरी हर बात।।
भूलें कैसे प्यारे, तेरा दलितों से प्यार....
स्वामी श्रद्धानन्द शूर, जिनके मुखड़े पै नूर।
'नाथू'[2] 'तुलसी'[3] सब खोजें, तेरे चरणों की धूल।।
बोले खंजर की धार, तेरा फूले परिवार,
कर दो जाति के वीरो, उसके सपने साकार।
करके तन, मन बलिदान, करिये सबका उद्धार।।
आओ गायें 'जिज्ञासु' गूँजे सारा संसार ......

***{1. जाति–रक्षा के लिए यहीं पं. लेखराम जी ने गाड़ी से छलांग लगाई थी।
2–3. आर्यसमाज के दो हुतात्मा थे।}***

'गंगा ज्ञान सागर भाग दूसरा' से साभार

लीची

लीची को हिंदी में 'लीची' (Litchi) ही कहा जाता है। यह एक रसीला और मीठा उष्णकटिबंधीय फल है जिसका वैज्ञानिक नाम लीची चिनेंसिस (Litchi chinensis) है। यह गर्मियों में खाया जाने वाला सबसे लोकप्रिय और सेहतमंद फल है।

लीची से जुड़े कुछ मुख्य तथ्य इस प्रकार हैं–

रंग–रूप : इसके बाहर का छिलका खुरदरा और मखमली–लाल या गुलाबी रंग का होता है। इसके अंदर सफेद रंग का मीठा गूदा और एक भूरे रंग का बीज होता है।

स्वास्थ्य लाभ : यह विटामिन C और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती है जो इम्युनिटी बढ़ाने और त्वचा को स्वस्थ रखने में मदद करती है।

हाइड्रेशन : गर्मियों में डिहाइड्रेशन (पानी की कमी) और लू से बचाने के लिए यह एक बेहतरीन फल है।

उपभोग की मात्रा : एक स्वस्थ वयस्क एक दिन में लगभग 8 से 10 लीची खा सकता है।

डी.ए.वी.स्थापना दिवस पर ठाणे में हुआ भव्य कार्यक्रम

डी.ए.वी. विद्यालय ठाणे में "डी.ए.वी. स्थापना दिवस" बड़े ही उत्साह और श्रद्धा के साथ को मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में हवन का आयोजन किया गया जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का आरंभ प्रातःकालीन सभा में प्रार्थना और भजनों के साथ हुआ। तत्पश्चात् योग शिक्षक द्वारा शिक्षकों को योग के विषय में बताकर ध्यान के महत्त्व को समझाया गया। इसके बाद सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने मिलकर योग किया।

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म"—यज्ञ सर्व श्रेष्ठ कर्म है"—इस बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में हवन का

आयोजन किया गया। संस्कृत शिक्षकों द्वारा वेदमंत्रों का शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण किए जाने से पूरा वातावरण अत्यंत पवित्र और सात्विक हो गया। संपूर्ण विद्यालय आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। संगीत शिक्षकों ने इस उपलक्ष्य पर मधुर भजन का गान किया। यज्ञप्रार्थना एवं शांति पाठ के साथ यज्ञ कार्य का समापन हुआ।

प्रधानाचार्या सिम्मी जूनेजा जी ने न केवल शिक्षकों को नए सत्र के लिए प्रेरित किया, बल्कि डी.ए.वी.स्थापना दिवस से संबंधित कुछ रोचक प्रश्न भी पूछे, जिनका शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया। सभी ने संकल्प लिया कि वे दयानन्द जी के दिखाए मार्ग पर चलकर समाज और राष्ट्र की सेवा करेंगे। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम के समापन की घोषणा हुई।

इडा कन्या वेद विद्यालय उधमपुर में लगा शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में लगभग 80 शिविरार्थियों का "इडा कन्या वेद विद्यालय गढ़ी उधमपुर" अध्यापन प्रो. डॉ. प्रतिभा पुरन्धि द्वारा किया गया।

भ्रमण के अतिरिक्त स्वाध्याय में भी शिविरार्थियों ने भरपूर रुचि दिखाई। भ्रमण

में "स्वाध्याय योग एवं भ्रमण शिविर" लगाया गया। भ्रमण के अतिरिक्त योग, यज्ञ एवं ऋषि दयानन्द के अति लघु ग्रन्थ 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' का स्वाध्याय भी करवाया गया।

इस शिविर का संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने किया। उनकी देख रेख में आर्योद्देश्य रत्नमाला का के साथ साथ स्वाध्याय करवाना यह सचमुच आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के आयोजकों का प्रशंसनीय कार्य रहा है।

आयोजकों और शिविरार्थियों दोनों को ही भूरिशः शुभकामनाएं। इस मध्य आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के प्रधान मास्टर श्री चूनीलाल, एडीसी एवं डीआईजी जम्मू का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

डी.ए.वी. न्यू पनवेल में डी.ए.वी. स्थापना दिवस का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, न्यूपनवेल के प्रांगण में डी. ए.वी. संस्थान के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में तथा स्वामी दयानंद सरस्वती जी की स्मृति में विद्यालय ध्वज फहराया गया। तत्पश्चात् छात्रों द्वारा डी.ए.वी. गान उत्साह पूर्वक प्रस्तुत किया गया। विद्यालय के प्रधान कार्यक्रम में उपस्थित छात्रों, शिक्षक/शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए प्राचार्य श्री सुमन्त घोष ने डी.ए. वी. आन्दोलन के ऐतिहासिक क्षणों को सांझा करते हुए 1000 डी.ए.वी. संस्थाओं में शिक्षा द्वारा देश की सेवा का वर्णन किया।

कार्यक्रम का समापन विदयार्थियों

छात्र द्वारा स्वामी दयानंद सरस्वती जी के आदर्शों, उनके योगदान तथा डी.ए. वी. संस्थान की गौरवशाली परंपरा पर प्रेरणादायक भाषण दिया गया। तथा क्रीडा शिक्षकों द्वारा ज्ञान, अनुशासन एवं सेवा के मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने के संकल्प के साथ किया गया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2026

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज अमृतसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन अमृतसर में 21 जून, 2026 को 'स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए योग' विषय के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन में महाविद्यालय के प्राध्यापकों, आर्य युवती सभा, शारीरिक शिक्षा विभाग की छात्राओं और एनएसएस इकाई के स्वयंसेवकों तथा 9 पंजाब बटालियन एनसीसी, अमृतसर के कैडेटों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ भारतीय योग संस्थान की योग प्रशिक्षिकाओं सुश्री सुनीता महाजन, सुश्री उजाला अग्रवाल एवं सुश्री शशि कक्कड़ द्वारा संचालित एक ऊर्जावान एवं ज्ञानवर्धक योग सत्र से हुआ। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए सुश्री सुनीता महाजन ने बताया कि नियमित योगाभ्यास व्यक्ति को आंतरिक शांति, स्फूर्ति तथा प्रकृति के साथ गहरा जुड़ाव प्रदान करता है। सुश्री उजाला अग्रवाल ने योगासनों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि ये हृदय को बेहतर बनाने शरीर की मुद्रा एवं संतुलन सुधारने तथा शारीरिक जागरुकता बढ़ाने में सहायक हैं। सुश्री शशि कक्कड़ ने योग को तनाव प्रबंधन की एक समग्र पद्धति बताते हुए कहा कि यह व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य एवं जीवन–गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार लाता है।

प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया ने विद्यार्थियों एवं शिक्षको को व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं सर्वागीण विकास के लिए योग को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया।

श्री सुदर्शन कपूर ने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक समग्र जीवन शैली है।

डी.ए.वी. दत्तनगर (हि.प्र.) में नशा निषेध जागरूकता कार्यक्रम

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल दत्तनगर (जिला शिमला) में अंतर्राष्ट्रीय नशा निषेध दिवस के अवसर पर नशा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत एक प्रभावशाली नाटक से हुई, जिसमें विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों तथा उनके शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों को अत्यंत सजीव ढंग से दर्शाया गया। इसके पश्चात् एक अन्य नाटक एवं प्रेरणादायक नृत्य–नाटिका के माध्यम से विद्यार्थियों के जीवन पर नशे के दुष्प्रभावों तथा इससे बचाव के उपायों को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया।

प्रधानाचार्या महोदया डॉ. मुक्ता चौहान ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए नशे से दूर रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा समाज में जागरूकता फैलाने का संदेश दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने जीवन के लक्ष्यों पर केंद्रित रहने और किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने नशामुक्त भारत के निर्माण हेतु नशे से दूर रहने तथा दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने की सामूहिक शपथ ली।

डी.ए.वी. भिलाई की अवनी शर्मा राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय

विज्ञान सेतु फाऊंडेशन नई दिल्ली ने अखिल भारतीय स्तर पर बालिकाओं के लिए आनलाइन विज्ञान प्रोजेक्ट प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता माह जून के प्रथम सप्ताह में पर्यावरण दिवस पर आयोजित की थी। इसमें देश भर से पर्यावरण संरक्षण विषय पर 144 प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए गए। इसका मूल्यांकन तीन निर्णायकों की समिति द्वारा किया गया।

उत्कृष्ट प्रोजेक्ट को शील्ड व मेडल से पुरस्कृत किया गया। डीएवी पब्लिक स्कूल हुडको भिलाई की कक्षा नवमीं की छात्रा अवनी शर्मा ने इस प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त कर अवार्ड आफ मेरिट हासिल किया। उल्लेखनीय है कि अवनी शर्मा अवार्ड पाने वाली छतीसगढ़ से एक मात्र प्रतिभागी हैं।

अवनी ने अपना प्रोजेक्ट विज्ञान शिक्षक अजय शर्मा के मार्गदर्शन में पूरा किया। अवनी की इस सफलता पर डीएवी छतीसगढ़ जोन के रीजनल ऑफिसर व प्राचार्य प्रशांत कुमार ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने हेतु छात्रा और उनके अभिभावकों को बधाई दी और कहा कि विद्यार्थियों की बुद्धिमत्ता ही शाला की पूंजी है। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि उन्हें हर अवसर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने हेतु तत्पर रहना चाहिए और असफलता से डरे बिना हर प्रतियोगिता में बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**